ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 26 जनवरी 2020

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 26 जनवरी 2020 से 01 फरवरी 2020

माघ शु. – 02 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 62, अंक 04, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

दरबारी लाल डी.ए.वी. मॉडल स्कूल एनडी ब्लॉक पीतमपुरा में रक्तदान शिविर

दरबारी लाल डी.ए.वी. मॉडल स्कूल पीतमपुरा के सभागार में रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। विद्यार्थियों में सामाजिक जागृति के उन्नयन हेतु इस रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों को राष्ट्र धर्म समझाया गया व सामाजिक कर्तव्यों से भी परिचित कराया गया। जन–जन के प्रति करुणा भाव की जागृति हेतु रक्तदान के इस महायज्ञ का अनुष्ठान किया गया। हमारे देश हित के लिए अनेक देशवासियों ने अपने प्राणों की आहुति दी,वह दान अनमोल था, उसी देश भक्ति के ऋण से उऋण होने

के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को रक्तदान का महत्व समझाया गया व प्रेरित किया गया। विद्यार्थियों में सामाजिक दायित्व जगाने का प्रयास भी इस रक्तदान शिविर के माध्यम से किया गया।

इस आयोजन में विद्यालय के शिक्षक वर्ग, भूतपूर्व विद्यार्थी व अभिभावकों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता वडेरा के कुशल नेतृत्व में इस शिविर का आयोजन हुआ व कुल 66 यूनिट रक्त इस कार्यक्रम के माध्यम से एकत्र किया गया।

नव सत्र के शुभावसर पर एच. एम. वी. में हुआ यज्ञ

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में नवीन सत्र का शुभारंभ यज्ञ से किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में जस्टिस (रिटा.) श्री एन. के. सूद (उप्रधान और डी. ए.वी. प्रबन्धक समिति, डी.ए.वी.सी.एम. सी), श्री एस. पी. सहदेव (सदस्य स्थानीय समिति) एवं प्रिसीपल श्रीमती अनीता नंदा उपस्थित रहे। संस्कृत विभागाध्यक्षा श्रीमती सुनीता धवन के संरक्षण में मंत्रोच्चारण सहित हवन अग्नि में आहुतियाँ डाली गईं। श्री प्रद्युमन जी ने भजन गायन कर वातावरण को आनंदित बनाया।

प्राचार्या प्रो. डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन जी ने अपने शुभाशीष में कहा कि आज नव सत्र का यह प्रथम दिवस हम सबके लिए विशिष्ट है। उन्होंने कहा कि हमें नववर्ष पर यह प्रण लेना चाहिए कि हम प्रत्येक मानव के सकारात्मक गुणों को ग्रहण कर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीणी विकास करें। उन्होंने डीएवी मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष आर्य रत्न श्री पूनम सूरी व श्रीमती मणि सूरी जी की ओर से बच्चों को नववर्ष पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमें उनके सुवचन 'आर्य बनों' के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। उन्होंने परमपिता परमात्मा से संस्था के स्वर्णिम इतिहास स्थापित करने हेतु याचना की।

मुख्यातिथि ने नववर्ष में संस्था की प्रगति व सफलता हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। इस अवसर पर एच. एम. वी. प्लैनर 2020 एवं एम. एम्. वी कलैण्डर 2020 का भी विमोचन किया तथा मुख्यातिथि ने इस महीने में जिनका जन्मदिवस है उन सदस्यों को उपहार भेंट कर सम्मानित किया। अंत में शांतिपाठ कर सर्वजन की मंगलकामना हेतु प्रार्थना की गई।

डी.ए.वी. कोटा में हुआ 'फिट इंडिया मूवमेंट सप्ताह' का आयोजन

डी.ए.वी., कोटा में भारत सरकार के **'फिट इंडिया मूवमेंट'** के अंतर्गत **'फिट इंडिया मूवमेंट सप्ताह'** का आयोजन किया गया। विद्यालय प्राचार्या एवं उपक्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने इस अवसर पर कहा इस सप्ताह में पहले दिन सभी के लिए योग, दूसरे दिन असेंबली में सभी के लिए फ्री हैंड एक्सरसाइज मानसिक स्वास्थ्य गतिविधियां – वाद – विवाद, संगोष्ठी, मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान तीसरे दिन खेलो इंडिया एप के माध्यम से छात्रों के फिटनेस आकलन की शुरुआत

फिट बॉडी. फिट माइंड. फिट एनवायरमेंट विषय पर पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता। चौथे दिन डांस एरोबिक्स योग मार्शल आर्ट्स तथा सभी छात्रों के लिए शारीरिक गतिविधियां, व स्किपिंग। पांचवें दिन सभी छात्रों के लिए फिटनेस प्रश्नोत्तरी छठवें दिन पारंपरिक स्वदेशी व क्षेत्रीय खेलों में छात्रों, शिक्षकों ने राजस्थान के क्षेत्रीय और पारंपरिक खेल **'सतोलिया'** का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के मैदान में छात्र–छात्राओं ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया।

विद्यालय प्राचार्या एवं उपक्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने इस अवसर पर कहा कि डी.ए.वी. में **'फिट इंडिया मूवमेंट सप्ताह'** के आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य बच्चों, शिक्षकों एवं अभिभावकों में अच्छे स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता एवं उत्साह बनाए रखना है।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 26 जनवरी 2020 से 01 फरवरी 2020

हे सोम! हृदय–कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **जगती**।

● **(सोम)** हे सोम परमात्मन्! **(तू)**, **(वृषा)** वर्षक **(होता हुआ)**, **(देववीतये)** दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, **(पवस्य)** प्रवाहित हो, **(इन्द्रस्य)** आत्मा के, **(हार्दि)** हृदय–रूप, **(सोमधानं)** सोम–कलश में, **(आविश)** प्रविष्ट हो।, **(बाधात्)** बाधे जाने से, **(पुरा)** पहले, **(नः)** हमें, **(दुरिता अति)** पापचरणों से लंघाकर, **(पारय)** पार करदे। **(क्षेत्रवित्)** मार्ग का ज्ञाता, **(विपृच्छते)** विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, **(दिशः)** दिशाओं को, **(आह हि)** बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द भगवत् कथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में आनन्द भगवत् कथा में महात्मा आनन्द स्वामी ने बताया कि दुनिया की जितनी भागदौड़ है वह केवल इसलिए है ताकि हमें सुख मिले और यह सुख उसी प्रभु, परमात्मा, नारायण की शरण ही से मिलता है। ''जब लोग चमड़े की तरह आकाश को लपेट सकेंगे तब उस देव–ईश्वर–नारायण को जाने बिना भी दुःख का अन्त होने लगेगा।'' तात्पर्य यह है कि आकाश को चर्म या चटाई की तरह लपेटना असम्भव है; इसी प्रकार परमात्मा को जाने बिना, प्रभु के दर्शन पाने का व्रत लिये बिना, दुःखों का अन्त होना असम्भव है।

श्री सत्यनारायण–व्रत लेने का मतलब यही है कि पूरे आस्तिक बनकर, प्रभु–आज्ञाओं का पालन करते हुए उसी को अपना मित्र बनाकर जीवन–कर्त्तव्य पूर्ण किये जायें। आज की दुनिया के कष्टों–क्लेशों का सबसे बड़ा कारण यही है कि आज का मानव परमात्मा से, नारायण से विमुख हो गया है **–अब आगे**

तीसरी बात यह है, प्रभु–भक्तों को वह सत्यनारायण सर्वथा शुद्ध करने के लिए भी कार्य करता रहता है। आपने तो अपनी बात कही कि 'जितना भजन करता हूँ, कष्ट उतना बढ़ जाता है।' अब मैं अपनी सुनाता हूँ कि भयंकर ज्वर ने मेरे शरीर को जकड़ लिया। सिर से पाँवों पर्यन्त असह्य पीड़ा तथा वेदना होती थी। एक मास चारपाई पर पड़ा रहा। तब एक दिन मैंने अन्तरात्मा से पूछा, इतना कष्ट क्यों? तब मुझे उत्तर मिला कि 'पिछला सारा वर्ष तुम निरन्तर भ्रमण में रहे हो। आत्मचिन्तन के लिए गंगोत्री भी नहीं जा सके। जगह–जगह का तुमने जल पिया है, नाना प्रकार के अन्न खाये हैं, दूषित अन्न भी खाये हैं, कुछ रजोगुण में भी पड़े हो। पाप की कमाई का अन्न चाहे भिक्षा ही में खाया हो, मन को बिगाड़ता है। ऐसे दूषित अन्न से बना रक्त शुष्क होना चाहिए, तभी मन–बुद्धि ठीक रह सकती है, अन्यथा बिगड़ने का भय है। इसीलिए तुम्हारे सारे शरीर की शुद्धि और मन–बुद्धि के ''काया–कल्प'' के लिए ऐसे ही भयंकर ज्वर की आवश्यकता थी, जो सारा रक्त चूस लेता । यह तुम्हें कष्ट नहीं दिया जा रहा–तप की भट्ठी में डालकर स्वर्ण की मैल को दूर किया जा रहा है। यह उत्तर सुनकर चित्त अत्यन्त प्रसन्न हो गया। श्री नारायण को बारम्बार धन्यवाद किया। पिछला दूषित रक्त चला गया, अब नया शुद्ध रक्त रगों में दौड़ने लगा है। क्या ऐसी घटना को कष्ट कहा जा सकता है?

श्रोता–महाराज। आपने तो सारे संशय को मिटा दिया।

वक्ता– मेरे सज्जनो। सत्यनारायण का व्रत लेने और उसकी कथा सुनने का यही लाभ है कि उस महान् प्रभु की शक्ति, महिमा और अपार कृपा का अनुभव होने लगता है। कष्ट कष्ट प्रतीत नहीं होते; गरीबी बुरी नहीं, अच्छी लगने लगती है। जैसे घर का सामान कुर्क होते देखकर कबीर ने माँ से कहा था– ''माँ! हम कितने भाग्यशाली हैं कि लोग तो माया से भागने के लाख यत्न करते हैं और हमसे माया आप ही भाग कर जा रही है''। और नरसी मेहता की बात क्या नहीं सुनी? जब उसकी पत्नी, पुत्र, सभी का देहान्त हो गया तो नरसी भक्त कहने लगा–''अच्छा हुआ, जंजाल से मैं छूट गया, अब निश्चिन्त होकर भजन करूँगा।''

यदि दुनिया के लोग इतने ईश्वर–विश्वासी और प्रभु–भक्त बन जायें, तो फिर कष्ट कहाँ रहेंगे! परमात्मा या नारायण सर्वव्यापक है। एक भक्त उसे जहाँ पुकारेगा, वह नारायण टेर अवश्य सुनेगा। इसलिए सामवेद में आता है कि–

ओं योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे।
सखाय इन्द्रमूतये।। (साम. 163)

''हर समय, भीड़ पड़ने पर, प्रत्येक युद्ध में हम सारे मित्र अति बलवान् परमात्मा को पुकारते हैं।''

और फिर अगले मंत्र में कहा है–

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत।
सखायः स्तोमवाहसः।। (साम. 164)

''हे मित्रो! आओ बैठो और स्तुति का प्रवाह चलाते हुए प्रभु का, नारायण का, भगवान् का कीर्तन करो।''

यही है दुःखों से बचने का मार्ग, परन्तु आज की दुनिया ने माया इकट्ठा करना ही दुःखों से बचने का एकमात्र साधन समझ रखा है।

ओ दुःखी संसारी लोगो! सुनो–

खोजी खोयो खाक में, अनुपम जीवन–रत्न।
कीन्हों मूर्ख क्यों नहीं, प्रभु–मिलन का यत्न।।
खोजी खटपट छोड़ि के, प्रभु–पद में मन जोड़।
काज न देगी अन्त में, पूँजी लाख करोड़।।

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

भारतीय पर्व : नवाचार–विचार

● देव नारायण भारद्वाज

प्रवेशिका–विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पंचतंत्र' में मन्दबुद्धि राजकुमारों को बुद्धिमान बनाने के लिए कतिपय बोध–कथायें लिखी गई है। उनमें से एक कथा की झलक आपको दिखाते हैं। परिवार के चार भाई, तीन बाहर जाकर ज्ञानार्जन से विशेषज्ञ वैज्ञानिक बन गये, एक घर पर अल्पपठित ही रह गया। एक बार किसी पर्व पर चारो ग्राम में एकत्र हुए। अवकाश के क्षणों में चारों जंगल–भ्रमण पर निकल पड़े, तीनों विशेषज्ञ अपनी–अपनी योग्यता का बखान करके फूले नहीं समा रहे थे। तभी उन्हें बिखरी पड़ी हुई अस्थियाँ दिखाई दीं। अस्थि विशेषज्ञ बोला–मेरे अस्थि ज्ञान का कमाल देखिये, और उसने उन अस्थियों को व्यवस्थित करके उस पशु का ढाँचा खड़ा कर दिया, जिसकी वे अस्थियाँ थीं। दूसरे रसायनज्ञ भाई ने उस ढाँचे पर मृदा–मांस का लेपन कर दिया। अब वह पशु सही रूप में सामने खड़ा हो गया। तीसरा भाई प्राण–क्रिया विशेषज्ञ बोला–मैं भी आप लोगों से कुछ कम नहीं हूँ। देखिये चुटकी में ही मैं इस पशु में प्राणों का संचार कर देता हूँ। चौथा बोला–भाइयो यही पर रुक जाइये। विद्या के अहंकार को भूल जाइये। तीनों भाई ठहरे विषय–विशेषज्ञ वैज्ञानिक, वे अपने भोले भाई का परामर्श मानें या अपने अहंकार को तानें। नवाचार से परिपूर्ण व्यावहारिक चौथा भाई पेड़ पर चढ़ गया। प्राण–क्रिया विशेषज्ञ भाई ने उस पशु में जैसे ही प्राण–प्रतिष्ठा की, तो शेर जीवित हो गया, और अपनी क्षुधा की तृप्ति के लिए सहज–सुलभ तीन–तीन सामने खड़े शिकार देख विशेषज्ञों की ओर झपट पड़ा। अस्तु परिस्थिति जन्य नवाचार के बिना कोई भी आविष्कार अधूरा है। राजस्थान में ग्रामीण गृहणियों को धुएँ से होने वाले नेत्र रोग व कैंसर से बचाने के लिए धूम्र रहित चूल्हों का आविष्कार किया गया। शासन की ओर से निर्मूल्य या अल्पमूल्य में उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में वितरित किया गया। प्रयोगशाला के छात्रों के लिए चूल्हे सफल थे, किन्तु परिवारों के पात्रों के लिए वे चूल्हे अनुपयुक्त थे। व्यर्थ पड़े रहते थे। एक महिला ने नवाचार बुद्धि का प्रयोग करते हुए चूल्हों के ईंधन प्रवेश के पाइप को तोड़कर चौड़ा कर दिया। उसमें अधिक जलावन जाने से वे चूल्हे बड़े पात्रों के लिए उपयोगी हो गये। यह है आविष्कार को नवाचार की देन।

उत्प्रेरिका–विशिष्ट व्यवस्थित ज्ञान ही विज्ञान कहलाता है। वृष्टि–कृष्टि–सृष्टि को प्रांजल रूप प्रदान करना इसका कार्य है। वैज्ञानिक–आविष्कारों एवं उनके नवाचारों की भाँति पर्वों के परिष्कारों द्वारा ही मानव सभ्यता का चरमोत्कर्ष संभव हुआ है। पर्व शब्द की व्युत्पत्ति 'पर्व पूरणे' धातु से होती है। **"पर्वति पूरयति जनाना नन्देनेति पर्व"** अर्थात् जिससे दृढ़ता, परिपूर्णता, मानवीय आनन्द की वृद्धि हो–वही पर्व कहलाता है। पर्व का सीधा–सा अर्थ है–ग्रन्थि या गाँव। जैसे दूर्वा ग्रास को लम्बाई व रसमयता, अथवा ईख की रसमयता व मधुरता इनकी गाँठों के कारण होती है, उसी प्रकार मानव जाति की ओजस्विता, दीर्घायुष्य एवं सुख सौम्यता इन पर्वों के कारण ही संभव होती है। 'पर्व शब्द के अन्तर्गत संस्कार एवं उत्सव का सहज समावेश होता है। संस्कार एक व्यक्ति में निखार लाते हैं, पर्व परिवार में सुख–सुधार लाते हैं, संस्कार एवं पर्व जब उत्सव बन जाते हैं, तो समाज व राष्ट्र के शृंगार के साधन बन जाते हैं। मानवीय जीवन पंचायतन ग्रन्थियों के द्वारा विस्तार व परिष्कार को प्राप्त होता है, जिन्हें हम क्रमशः 1. पतितत्व से अस्तित्व 2. अज्ञान से ज्ञान 3. अन्याय से न्याय 4. अभाव से भाव (प्रतिष्ठा) 5. अलगाव से लगाव की यात्रा कह सकते हैं।

पर्वो के आविष्कार–उपरोक्त वर्णित नैसर्गिक उत्प्रेरणा ही पर्वों के आविष्कार की आधारशिला है। सृष्टि की उत्पत्ति से ही प्रकृति–पादप पशु–पक्षी–मनुष्य अस्तित्व में आते हैं। नवजात शिशु अपने सदन में ही अपने अस्तित्व का घोष करने लगता है, आँखें खुलते ही वह अज्ञान से ज्ञान के प्रति सजग होता है, किसी भी उपेक्षा के अन्याय को अपेक्षा के न्याय में बदलने को वह व्यग्र रहता है, दुग्धादि का अभाव क्षुधा का रूप धारण करता है, इसकी पूर्ति में ही वह अपनी प्रतिष्ठा मानता है, और माता–पिता व अन्य पालन कर्ता का अलगाव–पृथक्करण उसे बेचैन कर देता है और इनका लगाव या गले से लगा लिए जाने पर ही उसे चैन मिलता है। ऊपर जिन पाँच उत्प्रेरणाओं का वर्णन किया है, वे न केवल नवजात शिशु के जीवन की वांछनीयता है, प्रत्युत किशोर, युवा, प्रौढ़ व वृद्ध हर स्त्री–पुरुष की अपरिहार्य आवश्यकता है। इसीलिये मानवीय जीवन को प्रखर प्रफुल्लित परिमार्जित बनाये रखने के लिये भारतीय मनीषियों ने उसके लिये पाँच प्रमुख पर्वों के आविष्कार किये हैं, अर्थात् चिन्तन मनन के साथ उनके विधि–विधान का निर्माण किया है। इन पर्वों को प्रस्तुत तालिका के द्वारा प्रदर्शित करते हैं।

क्र.सं.	पर्व संज्ञा	आधार	अभ्युक्ति
1.	नव सम्वत्सर	पतितत्व से अस्तित्व का आभास	शिशिर में पतझड़ के साथ नवांकरण 'पति' अर्थात् परमेश के स्वभाव में सृष्टि की रचना
2.	श्रावणी	अज्ञान से ज्ञान का प्रकाश	अज्ञान के हनन से ज्ञान–प्रेरणा, प्रभु प्रदत्त वेद–प्रसार से ज्ञान का प्रकाश
3.	विजय दशहरा	अन्याय से न्याय का अभ्यास	अन्याय हटाकर न्याय स्थापन–प्रेरणा, राज्य व्यवस्था, प्रजा–सुख हेतु शत्रुसंहार
4.	दीपावली	अभाव से भाव का विकास	निर्धनता मिटाकर समृद्धि प्रेरणा प्रकाश के विकास से प्रजा–वत्सलता
5.	होली	अलगाव से लगाव का प्रयास	विघटन घटाकर संगठन–प्रेरणा, नवागत अन्नधन से सौहार्द सर्वोदय

पर्व–आविष्कार के मूलाधार–देवार्चन, ऋतु–परिवर्तन, महापुरुष–स्मरण, स्नेह–संगठन एवं मंगल–आनन्द वर्धन पर्वों के मूलाधार हैं। पृथ्वी बारह महीनों में सूर्य का एक चक्र पूर्ण करती है। जिसे मानव का एक वर्ष कहते हैं। प्रति वर्ष इन पर्वों की आवृति–पुनरावृति क्रमशः होती रहती है; जिनका मूलाधार अनुसन्धानरत ऋषियों ने युक्तियुक्त ढंग से प्रतिपादित किया है। ज्योतिष के हिमादि ग्रन्थ के अनुसार **"चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि। शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।"** अर्थात् चैत्रमास शुक्लपक्ष के प्रथम दिन सर्वोदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की। आगे चलकर इस पूर्व परम्परानुसार भारतवासियों के अधिकांश संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही आरम्भ किये गये, और राज्याभिषेक आदि के महत्त्वपूर्ण समारोहों के लिये इसी तिथि को मान्यता दी गयी। नवसम्वत्सर या नववर्ष के दिन प्रथम सूर्योदय एवं सृष्टि सृजन का उत्सव पुरातन काल से मनाया जाता रहा है। श्रावण मास के शुक्लपक्ष की पूर्णिमा को श्रावणी वर्ष मनाया जाता है, जो श्रुति अर्थात् वेद के श्रवण–श्रावण (सुनने–सुनाने) से सम्बन्धित होने के कारण अज्ञान के हनन एवं ज्ञान के ग्रहण की ओर प्रेरित करता है। भारत वर्ष वर्षा बहुल एवं कृषि प्रधान देश है। यहाँ की कृषक प्रजा आषाढ़ एवं श्रावण में कृषि–कार्य–कलाप में व्यस्त रहती है। श्रावणी शस्य की जुताई–बुवाई आषाढ़ से प्रारम्भ होकर श्रावण के अन्त तक समाप्त हो जाती है। प्रजा के सभी वर्ग वर्षा ऋतु में विश्राम के क्षणों में वेद–गीता–उपनिषद् तथा अन्यान्य उपदेशों का श्रवण सन्त–महात्माओं को आमन्त्रित करके करते हैं। व्यावहारिक जीवन के परिष्कार और आध्यात्मिक जीवन के उद्धार के लिए यह ज्ञान बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। वर्षा के थमते ही राष्ट्र के सभी वर्ग अपने कर्मक्षेत्र के लिए प्रयाण करने की दृष्टि से आश्विन शुक्ल दशमी पर विजय दशहरा पर्व मनाते हैं। स्वाध्याय–सत्संग कथाओं से उन्होंने **अपनी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं पाँच कर्मेन्द्रियों, अर्थात** इन दसों के दोषों का हरण एवं दसों में विजय के वरण का लक्ष्य तय कर लिया है। अब उन्हें सांसारिक उपलब्धियों एवं अन्याय पर न्याय यात्रायें आरम्भ करनी है। राष्ट्र रक्षक सेना नायकों को अपने अस्त्र–शस्त्र स्वच्छ सक्रिय व सक्षम बनाने है। यही उनका पूजन है। यह आवश्यक इसलिये है; जैसा कि पुलिस महानिदेशक ने अपने पुलिस बल का निरीक्षण किया, तो पाया उनके अस्त्र–शस्त्र जंग लगे, भण्डार में पड़े हैं, और प्रयोगकर्ता आरक्षियों को निशाना लगाना भी नहीं आता है। यह पर्व आयुध और योधाओं का दक्षता का ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए है।

यह विजय दशहरा पर्व वाणिज्य–व्यवसायियों की साफल्य समीक्षा का ओर भी दिशा–निर्देश करता है जो वे अपने लेखा पुस्तिकाओं का प्रतीक रूप में पूजन या अनुरक्षण की औपचारिकता निभाते हैं। राष्ट्र–रक्षा, कृषि–वाणिज्य–प्रविधि के विकास से राष्ट्र धन–लक्ष्मी से समृद्ध होता है। श्रावणी (खरीफ) की फसल पक कर घर–भण्डार भर जाने वाले होते हैं। अपने इस हर्ष–उत्साह को नागरिक, दीपावली के रूप में **"तमसो मा ज्योतिर्मय"** की भव्य भावना के साथ हर भवन–द्वार को प्रज्वलित दीपकों की माला से जगमगा देते हैं। यह दीप मालिका प्रकृति पर मानवीय कृति की विजय लक्ष्मी का प्रतिनिधित्व करती है। संपूर्ण वर्ष की कार्तिक कृष्ण अमावस्या सर्वाधिक गहन अन्धकार वाली होती है। अन्धकार को इस दीप मालिका के द्वारा मानव हराकर ज्योति का राज्य स्थापित कर देता है। नयी फसल के नव धान की प्रफुल्लित खीलों का यज्ञ–देवार्चन में समर्पित करके वह परमेश प्रभु के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। इसीलिये इस पर्व को **शारदीय नव सस्येष्टि** भी कहते हैं। एक आशंका जो निर्धनता में जितनी रहती है, बहु धनवान होने पर बलवती हो जाती है, वह है ईर्ष्या–द्वेष–वैमनस्य की आशंका। रबी फसलों की बुवाई होकर जब फसलें अधपकी हो जाती हैं, तभी फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को होली का पर्व मनाया जाता है। अधपके अन्न को भूनने पर उसकी संज्ञा होला या होलक हो जाती है। गली–मोहल्लों में सामूहिक यज्ञाग्नि में जौ की बालियाँ भूनकर आहुतियाँ दी जाती हैं। लोग इन्हीं जौ के दानों को परस्पर भेंट करके गले मिलते हैं जिससे प्रेम बढ़े और यदि किसी वैमनस्य से अलगाव हो गया हो तो वह फिर से लगाव में ढल जाये। परिवार–समाज–राष्ट्र विघटन से बचकर संगठन में आबद्ध हो जाये। भाँति–भाँति के मिष्ठान्न–पकवान बनाकर और एक दूसरे के परिवारों में मेल–मिलाप के साथ मिल–भेंट कर खाने से प्रेम बढ़ता है। अस्तु इस पर्व की मूल शास्त्रीय संज्ञा **वासन्ती नव शस्येष्टि** सटीक है। कवि की यह पंक्तियाँ ऐसा ही इंगित करती हैं।

होली है तो आज अपरिचित से परिचय कर लो,
होली है तो आज सुपरिचित से मैत्री कर लो।
बिसरा कर विष भरे वर्ष के वैर विरोधों को,
होली है तो आज शत्रु को बाहों में भर लो।

क्रमशः

वरेण्यम अवंतिका प्रथम रामघाट मार्ग
अलिगढ़–202001

धर्म शहीद–बालक हकीकत राय

● आचार्य डॉ. बृहस्पति मिश्र

आर्यवर्त्त (भारतवर्ष) वीर शहीदों, धर्मात्माओं, ऋषियों, मुनियों की पुण्य–भूमि है। समय–समय पर भारत के वीर शहीदों ने देश, धर्म, जाति की रक्षा में हँसते हुए अपना जीवन भेंट चढ़ाया है। उन्हीं वीर शहीदों की प्रथम पंक्ति में धर्म शहीद बाल हकीकत राय का नाम आता है। जिसने पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में धर्म रक्षा में अपने प्राण न्योछावर कर संसार को चकित कर दिया था। आइए, उसी वीर बालक के महान् त्याग एवं बलिदान की गाथा पढ़ें।

पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) में स्यालकोट नाम का नगर है। वहाँ महाजन भागमल एवं उसकी पत्नी कौरा देवी रहते थे। सन् 1719 ईस्वी मे उनके घर में एक पुत्र जन्मा। उसका नाम हकीकत राय रखा गया। परिवार धन–धान्य से भरपूर था, फलतः हकीकत राय का पालन–पोषण बड़े लाड़–प्यार से हुआ। वह कुशाग्र बुद्धि था, सब उसे घर में प्यार करते थे। महाजन भागमल तथा श्रीमती कौरा देवी उसे रामायण, महाभारत की कथाएँ सुनाया करते थे। उनकी धर्म परायणता का बालक हकीकत राय पर प्रभाव पड़ा।

आठ वर्ष की आयु में बालक हकीकत राय ने पढ़ाई शुरू की। तेज मेधा बुद्धि होने से वह एक बार में समझाने से ही पाठ याद कर लेता था। मौलवी अध्यापक उस पर बेहद प्यार करता था, इसलिए मुसलमान बालक उससे ईर्ष्या–द्वेष करते थे।

एक दिन मौलवी साहब किसी कार्यवश पाठशाला से कुछ समय के लिए बाहर चले गए तथा जाते समय हकीकत राय को उन्होंने कक्षा सम्भालने का आदेश दिया। उनके चले जाने पर मुसलमान बच्चों को उसने शोर–शराबा करने से रोका तो उन्होंने उसकी भारी पिटाई की। मौलवी साहब के आने पर हकीकत राय ने सारी बात उन्हें बता दी। मौलवी साहब ने मुसलमान बच्चों की अच्छी तरह धुनाई की तथा हकीकत राय को पुचकाकर छाती से लगाया। इससे मुसलमान बालकों ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातमा को गाली देने का आरोप लगाकर मौलवी की शिकायत अपने माता–पिता और नगर के काजी से कर दी। उन दिनों काजियों का बोल–बाला था। उन्होंने फतवा जारी कर दिया कि या तो हकीकत राय मुसममान बने या उसका सिर काट लिया जाए। महाजन भागमल, कौरा देवी अन्य गणमान्य हिन्दुओं ने काजी से प्रार्थना की कि छोटे से बालक को क्षमा कर दिया जाए लेकिन उनकी प्रार्थना किसी ने भी नहीं सुनी तथा मुख्य काजी ने भागमल, कौरा देवी को लात मार–मारकर भगा दिया।

कुछ हिन्दुओं ने नगर के हाकिम अमीर बेग के पास जाकर सारी घटना सुनाई। नगर हाकिम एक शरीफ आदमी था। उसने काजियों को बुलाकर समझाया कि यह छोटे–छोटे बच्चों का झगड़ा है, उसे खत्म करने में ही सबकी भलाई है। उसके समझाने पर भी वे न माने और अमीर बेग पर भी रिश्वत लेने का आरोप लगा दिया। उसके भी विवश होकर मामला नवाब लाहौर को भेज दिया।

लाहौर के नवाब का कोई पुत्र नहीं था, केवल उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम नूरा था। उसने बालक हकीकत राय की सुन्दर भोली सूरत तथा छोटी उम्र देखी और सारे मामले को सुना तो दंग रह गया कि अब क्या किया जाए। अचानक उसने हकीकत राय से कहा–बेटा, हकीकत राय, मैं तेरी सुन्दर भोली सूरत पर पूरी तरह कुर्बान हूँ। तू मेरी एक बात मान ले तू मुसलमान बन जा तेरी जान बच जाएगी। मैं अपनी खूबसूरत बेटी नूरा का तेरे साथ निकाह का दूँगा। सारी जायदाद (सम्पत्ति) का तू मालिक बन जाएगा। हकीकत राय ने नवाब का यह फैसला सुनकर उत्तर दिया।

नवाब साहब, बात आपकी, मुझे न तनिक सुहाती है।
सच कहता हूँ, अक्ल आपकी, मुझको यह दर्शाती है।।
जो जग को रचने वाला है, सर्व विश्व का है स्वामी।
तुम जगदीश्वर को भूल गए, जो सच्चा न्यायकारी नामी।।
यदि मुसलमान बन जाऊँ मैं, क्या मौत मुझे ना आएगी।
वह शक्ति कौन सी है जग में, जो तुमको सदा बचाएगी।।

बालक हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब दंग रह गया और सिर नीचा करके बोला– "बेटा, संसार में प्रत्येक व्यक्ति की मौत आती है। मौत के पंजे से कोई भी नहीं बचा है और न बचेगा।" नवाब की यह बातें सुनकर वीर हकीकत राय ने गरजते हुए कहा–

मरना है सबको एक रोज, तो फिर क्यों धर्म डुबाऊँ?
गौ रक्षक से गौ भक्षक बन, फिर पापी, क्यों कहलाऊँ मैं?
मैं राम कृष्ण का वंशज हूं, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।
मेरी तो मौत सहेली है, मैं उसे गले लगाऊँगा।।
है अमर आत्मा, याद रखो, न मारे से मर सकती है।
ईश्वर कर्मों का फल देता, न पेश किसी की चलती है।।
मैं जन्म दूसरा धारूँगा, दोबारा जग में आऊँगा।
फिर तुम जैसे हत्यारों से, निर्भय होकर टकराऊँगा।।

नवाब ने जब हकीकत राय की यह सिंह–गर्जना सुनी, वह क्रोध के मारे लाल–पीला हो गया। उसने उसी क्षण जल्लाद को बुलवाया और हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दिया। यह देखकर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। किसी में कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी। भागमल, कौरा देवी और रिश्तेदार रो रहे थे। हकीकत राय की चौदह वर्ष की आयु में बटाला की लक्ष्मी देवी से शादी हो गई थी। वह बेचारी बटाला में बिलख रही थी। हिन्दू जनता भयभीत थी, यह था आपसी फूट का भंयकर परिणाम।

यह सन् 1734 ईस्वी की घटना हैं। सारे देश में बसन्त पंचमी का महापर्व मनाया जा रहा था और लाहौर में घोर अत्याचार हो रहा था। बालक हकीकत राय को वध स्थल पर ले जाया गया। जल्लाद ने जब हकीकत राय को देखा तो उसका पत्थर दिल भी पिघल गया और तलवार हाथ से नीचे गिर गई। यह देखकर हकीकत राय बोला।

जल्लाद दया करके भाई, अब बात मान ले तू मेरी।
तू तो अब अपना फर्ज निभा, क्यों करता है वृथा देरी।।
यदि मुझसे मोह करेगा, अब तू नाहक मारा जाएगा।
तेरे भी बालक रोएँगे, सारा कुनबा दु:ख पाएगा।।
मत बाधा बन मेरे पथ में, तू जल्दी कर, तू जल्दी कर।
मुझको तू धर्म निभाने दे, मेरे ह्रदय की पीड़ा हर।।

जल्लाद ने हकीकत राय की बात मानकर तलवार हाथ में ली और दिल मजबूत कर वीर हकीकत राय की गर्दन पर तलवार का भरपूर बार किया। हकीकत राय का सिर कटकर एक ओर धरती पर गिर गया। कहते हैं वह उस समय हँस रहा था। धन्य था बालक हकीकत राय। वह धर्मरक्षा में अपना सिर कटवाकर भारत माता का सिर संसार में ऊँचा कर गया। जब तक सूरज, चाँद, सितारे, पृथ्वी रहेंगे, वीर हकीकत राय का नाम भी अमर रहेगा और भारत वीरों को धर्म रक्षा में बलिदान होने की प्रेरणा देता रहेगा।

वैदिक प्रवचन प्रकाश से साभार

☞ पृष्ठ 02 का शेष

आनन्द भगवत् कथा

प्रभु ही को अपना सच्चा साथी बना लो, तब जीवन पूरी प्रसन्नता से सफल होगा––

दीप जले बिन बाती न।
जीवन कटे बिन साथी न।।

ऐ मेरी माताओं तथा सज्जनो! यही उस सत्यनारायण की कथा है। आओ, उस प्यारे प्रभु का गीत हम सब मिलकर गायें––हाँ, पूरी मस्ती से गायें–

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल–पल क्षण–क्षण रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
–चाहे बैरी कुल संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
–चाहे कष्टों ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर चित्त न डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
–चाहे काँटों में मुझे चलना हो,
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
–मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम ये आठों याम रहे।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है सच्चा सुख केवल,
भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यहि विनती है पल–पल क्षण–क्षण,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

कितना माधुर्य है आप सबके मिलकर गाने में! परन्तु आज सब व्रत ले लो कि हम सदा–सर्वदा परमात्मा की भक्ति में तत्पर रहेंगे।

भक्ति एक दिव्य नशा है, इसी नशे को पिये रखो, फिर देखो–दु:ख कहाँ भाग जाते हैं। सुख, हाँ, शाश्वत सुख यदि कहीं मिलता है तो वह प्रभु ही के पास मिलता है और इसका सरल उपाय यह है कि अपने–आपको प्रभु को अर्पण किये रखो। यह व्रत लेकर अपना लोक–परलोक दोनों सुधार लो।

ओ३म् शम्!!

स्वामी दयानन्द का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य मूर्तिपूजा का खंडन

● लाला लाजपत राय

ऋषिभक्त एवं आजादी के आन्दोलन के एक शीर्ष नेता लाला लाजपत राय जी ने सन् 1898 में ऋषि दयानन्द जी की उर्दू भाषा में एक जीवनी लिखी थी। इसका हिन्दी अनुवाद सन् 1967 में दिल्ली से प्रकाशित सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र में छपा था। इस हिन्दी जीवनी का शीर्षक था 'महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम'। लाला जी के अनुसार ऋषि दयानन्द ने चार मुख्य काम किये। 1–मूर्तिपूजा का खंडन, 2– ब्राह्मण वाद से मुक्ति, 3– वेदों का भाष्य और 4– आर्य समाज की स्थापना। लाला जी के अनुसार इन चारों कार्यों में मुख्य कार्य था मूर्तिपूजा का खंडन। इस लेख में लाला जी का मूर्तिपूजा के खंडन विषयक प्रसंग प्रस्तुत है।

स्वामी दयानन्द जी अभी बालक थे, जब उनको यह बोध हुआ कि मूर्तिपूजा ईश्वर उपासना का सच्चा मार्ग नहीं, वरन बहुत बुरा और भ्रष्टाचार है। यह विचार दृढ़ता से उनके हृदय में जम गया और सारी उम्र उनके हृदय से यह विचार कम न हुआ। बालकपन में ही अपने माता–पिता के सामने मूर्तिपूजा का निषेध किया और अपने पिता के बड़े क्रोध करने पर भी जो एक बालक के लिये अतीव भयजनक होता है, उन्होंने उस अपने विश्वास को छिपा न रखा। ब्रह्मचर्य और उसके पीछे संन्यास अवस्था में भी कभी अपने विश्वास को नहीं छिपाया। न किसी मंडली से डरा और न किसी मंडली वाले से। न किसी राजा से डरा और न किसी पंडित से। जब तक जीते रहे अपनी सिंह ध्वनि को मूर्तिपूजा के खंडन में गर्जाते रहे। संसार को मूर्तिपूजा से हटाकर निराकार ईश्वर की उपासना की ओर प्रेरणा करना उनके जीवन का बड़ा उद्देश्य था और प्रत्येक मनुष्य को विदित है कि किस दिलेरी और हिम्मत से उन्होंने उस प्रकाश को बुझने नहीं दिया जो उनको बाल्यावस्था में हुआ था।

हर एक हिन्दू जानता है कि जैसे स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा का बड़ा शत्रु था, उपनिषदों के जमाने के पीछे भारतवर्ष में ऐसा साहसी, निर्भय, कठोर और प्रत्यक्ष शत्रु मूर्तिपूजा का कोई नहीं पैदा हुआ। सारी दुनिया क्या ईसाई, क्या मुसलमान, क्या पौराणिक, क्या वेदान्ती और क्या बौद्ध सब इस बात को जानते हैं कि मूर्तिपूजा उन विषयों में था जिनके मानने का विचार उनके हृदय में कभी पैदा नहीं हुआ था। उसके खंडन में उनके सजातीय, एक भाषा वाले और एक धर्म वाले मनुष्यों, साधारण मनुष्यों ने ही नहीं परन्तु विद्वानों ने भी, उसे 'नास्तिक' कहा है। किसी ने उन्हें पादरियों का वैतनिक सेवक कहा, किसी ने धर्म का शत्रु बतलाया। परन्तु इस पुरुष सिंह ने किसी एक की भी परवाह नहीं की। कई बार उसके सजातीय पंडितों ने छिपकर और कई बार प्रकट होकर रुदन करके उनसे यह प्रार्थना की कि वह मूर्तिपूजा का खंडन छोड़ दें, तो वह उसको अवतार बनाकर पूजने को तैयार हैं। परन्तु उस महापुरुष के हृदय में न उनके रोने–पीटने का और न उनकी रिश्वत का असर हुआ। वह एक दृढ़ आसन पर बैठा था जिससे उसको कोई हिला नहीं सकता था। बहुत से ठाकुरों, राजा, महाराजाओं ने पौशीदा और प्रकट होकर यह सम्मति दी कि वह मूर्तिपूजा का खंडन छोड़ दें। उसको अनेक प्रकार का लोभ दिया गया, कभी–कभी धमकियाँ भी दी गईं। प्राणों का भय, बदनामी का डर और धिक्कारों की बुझाड़ कमशः उनके सामने आये परन्तु उसके दृढ़ हृदय पर कुछ भी असर न कर सके। मूर्तिपूजा को जिस रीति, जिस स्थान और जिस दशा में देखा वहीं उसका बड़ी निडरता से खंडन कर दिया। यह विषय उसके हृदय में पाषाण रेखा के समान अंकित था जिसे कोई वस्तु मिटा नहीं सकती थी। यह एक ऐसा विषय था जिस पर वह सारे संसार की परवाह नहीं करता था। काशी के 300 पंडित, कलकत्ते के विद्वान् और दुनिया के दार्शनिक कोई उसको इस आसन से नहीं हिला सके। महाराजा जयपुर, महाराजा उदयपुर, महाराजा जोधपुर, महाराजा इन्दौर और महाराजा काशी सबके प्रयत्न व्यर्थ हुए। मुसलमान और ईसाई प्रकट रीति से मूर्तिपूजा के शत्रु हैं परन्तु उनमें भी जितना अंश उसने मूर्तिपूजा का देखा उसका बड़े साहस से खंडन किया।

स्वामी दयानन्द का विश्वास था कि केवल बुद्धि के अनुसार ही मूर्तिपूजा भ्रष्टाचार (मिथ्याचार) नहीं है, वरंच वेदों में भी उसकी मनाही है और ईश्वरीय ज्ञान के भी विरुद्ध है। स्वामी जी का यह दृढ़ विश्वास था कि मूर्तिपूजा समस्त धर्म और शिष्टाचार सम्बन्धी बुराइयों की माता है और पोलिटिकल दासभाव और अप्रतिष्ठा उसका आवश्यक फल है। वह समझता था कि हिन्दुवंश कभी धर्म के सत्यपथ पर नहीं चल सकता और न सोशियल या पोलिटिकल उन्नति कर सकता है जब तक कि वह मूर्तिपूजा को न छोड़ दे। इसलिये अपनी आत्मा का समस्त बल उसने मूर्तिपूजा के खंडन में व उसको वेद विरुद्ध और बुद्धि के विरुद्ध करने में लगा दिया।

कौन नहीं जानता उसने बड़े–बड़े बुतपरस्तों और बड़े–बड़े मूर्तिपूजा के भक्तों के दिलों को हिला दिया। उसने हिन्दू जाति के स्थिर हुए जल को चलायमान कर दिया और हिन्दू पंडितों को इस खोज में डाल दिया कि मूर्तिपूजा के मंडन के प्रमाण ढूँढ़े क्योंकि स्वामी जी वेदों को पूर्णरूप में मानने वाले थे। यदि वेदों में मूर्तिपूजा का प्रमाण मिल जाता तो उसको पूर्ण उत्तर मिल जाता।

सत्य तो यह है कि मूर्तिपूजा और देवपूजन के खंडन में स्वामी दयानन्द ने वह काम किया कि जिसमें स्वामी शंकराचार्य जैसे महात्मा भी घबरा गए और अशक्त रहे। **मूर्तिपूजा को वेद विरुद्ध सिद्ध करने से स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म के शत्रुओं और अन्य मजहब वालों से उनका और उससे दृढ़ भयानक शस्त्र जिससे वह हिन्दू धर्म को चकनाचूर कर देते थे, छीन लिया।** मुसलमान और ईसाइयों को सबसे बड़ी शंका जो वेदों के धर्म से विरुद्ध थी, स्वामी दयानन्द की शिक्षा से छिन्न–भिन्न हो गई। **मुसलमान और ईसाइयों की अब यह शक्ति न रही कि हिन्दू धर्म को मूर्तिपूजा का धर्म बतलाकर हिन्दुओं को बहका सकें और अपने सम्प्रदाय में मिला सकें। मानो कि ईसाई और मुसलमानों के हमलों का सारा बल टूट गया।** मूर्तिपूजा के दृढ़ दुर्ग को वास्तव में शुद्ध ईश्वरपूजा का विरोधी सिद्ध करके स्वामी दयानन्द ने मुसलमान और ईसाइयों के दावों को निर्मूल (निर्बल) बना दिया। **लाखों जीवों** (आर्य–हिन्दुओं) **को अपने धर्म से पतित होने से बचा लिया।** यदि स्वामी दयानन्द जी अपने जीवन में और कुछ भी न करते और केवल इतना ही (मूर्तिपूजा को वेद विरुद्ध सिद्ध) कर जाते तो भी हम समझते हैं कि केवल इस काम से वह महापुरुष कहलाने के योग्य होते। परन्तु स्वामी दयानन्द ने और भी महान् कार्य किये हैं। हमारे यह कहने में कुछ भी शंका नहीं कि मूर्तिपूजा का खंडन स्वामी दयान्द के जीवन का मुख्य उद्देश्य था।

प्रस्तुतकर्ताः मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 9412985121

उपनिषत्कार ऋषि तो 'आर्य समाज' के सदस्य नहीं थे!

● भावेश मेरजा

वेदों की तरह उपनिषदों में भी ईश्वर को निराकार एवं अजन्मा बताया गया है। उदाहरण के रूप में यहाँ मात्र दो प्रमाण विचार हेतु प्रस्तुत किए जाते हैं –

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात्।
जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यं।।

(श्वेताश्वरोपनिषदः 2.1)

अर्थात् वह परमात्मा अजर, अमर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, विभु और नित्य है । ब्रह्मवादी कहते हैं कि वह कभी जन्म नहीं लेता।

दिव्योह्यमूर्तः पुरुष सः बाह्यान्यन्तरो ह्यजः।
अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतः परः।।

(मुंडक उपनिषद्: 2.1.2)

अर्थात् वह परमेश्वर अमूर्त, अन्दर–बाहर व्यापक, अजन्मा, प्राण–रहित, मन–रहित, शुद्ध (पूर्ण ज्ञानी–सर्वज्ञ) तथा अत्यन्त सूक्ष्म है।

ये उपनिषत्कार ऋषि लोग तो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित 'आर्य समाज' के सदस्य नहीं थे! कम से कम उनकी उक्त सत्य बातों को तो स्वीकार करने में हमारे मूर्तिपूजक मित्रों को संकोच नहीं करना चाहिए। हमारे ये पुरातन ऋषि लोग कहते हैं कि–ईश्वर कभी शरीर धारण नहीं करता, कभी जन्म नहीं लेता, वह सर्वत्र व्यापक है, अमूर्त है–उसे आँखों से देख नहीं सकते, अति सूक्ष्म होने से सम्पूर्ण जगत् में अर्थात् सभी जीवात्माओं तथा जड़ जगत् में व्यापक रहता है। कितनी सरल बात कही है–इन ऋषिओं ने! आर्य समाज भी ईश्वर के स्वरूप के बारे में बस यही बात कहता है। इस पर शान्त भाव से विचार करने की आवश्यकता है। विशुद्ध एकेश्वरवाद से अखिल मानवता को एक सूत्र में जोड़ा जा सकता है।

8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच, गुजरात–392015,
मो. 9879528247

ग्रन्थकार लाला लाजपतराय

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

भारत की आज़ादी के आन्दोलन के प्रखर नेता लाला लाजपतराय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार करता है। अपने देश, धर्म तथा संस्कृति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी। उनके बहुविध क्रियाकलाप में साहित्य–लेखन एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। वे उर्दू तथा अंग्रेज़ी के समर्थ रचनाकार थे।

लालाजी का जन्म 28 जनवरी, 1865 को अपने ननिहाल के गाँव ढुँढिक (जिला फरीदकोट, पंजाब) में हुआ था। उनके पिता राधाकृष्ण लुधियाना जिले के जगराँव कस्बे के निवासी अग्रवाल वैश्य थे। लाला राधाकृष्ण अध्यापक थे। वे उर्दू–फारसी के अच्छे जानकार थे तथा इस्लाम के मन्तव्यों में उनकी गहरी आस्था थी। वे मुसलमानी धार्मिक अनुष्ठानों का भी नियमित रूप से पालन करते थे। नमाज़ पढ़ना और रमजान के महीने में रोजा रखना उनकी जीवनचर्या का अभिन्न अंग था तथापि वे सच्चे धर्म–जिज्ञासु थे। अपने पुत्र लाला लाजपतराय के आर्यसमाजी बन जाने पर उन्होंने वेद के दार्शनिक सिद्धांत त्रैतवाद (ईश्वर, जीव तथा प्रकृति का अनादित्य) को समझने में भी रुचि दिखाई। लालाजी की इस जिज्ञासु प्रवृत्ति का प्रभाव उनके पुत्र पर भी पड़ा था।

लाजपतराय की शिक्षा पाँचवें वर्ष में आरम्भ हुई। 1880 ई. में उन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एंट्रेंस की परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आए। यहाँ वे गवर्नमेंट कॉलेज में प्रविष्ट हुए और 1882 में एफ.ए. की परीक्षा तथा मुख्तारी की परीक्षा साथ–साथ पास की। यहीं वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आए और उसके सदस्य बन गए। डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर के प्रथम प्राचार्य लाला हंसराज (आगे चलकर महात्मा हंसराज के नाम से प्रसिद्ध) तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. गुरुदत्त उनके सहपाठी थे, जिनके साथ उन्हें आगे चलकर आर्यसमाज का कार्य करना पड़ा। इनके द्वारा ही उन्हें महर्षि दयानन्द के विचारों का परिचय मिला।

1882 के अन्तिम दिनों में वे पहली बार आर्यसमाज लाहौर के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित हुए। इस मार्मिक प्रसंग का वर्णन स्वयं लालाजी ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है– "उस दिन स्वर्गीय लाला मदनसिंह बी.ए. (डी.ए.वी. कॉलेज के संस्थापकों में प्रमुख) का व्याख्यान था। उनको मुझसे बहुत प्रेम था। उन्होंने व्याख्यान देने से पहले समाज मन्दिर की छत पर मुझे अपना लिखा व्याख्यान सुनाया और मेरी सम्मति पूछी। मैंने उस व्याख्यान को बहुत पसन्द किया। जब मैं छत से नीचे उतरा तो लाला साँईंदास जी (आर्यसमाज लाहौर के प्रथम मंत्री) ने मुझे पकड़ लिया और अलग ले जाकर कहने लगे कि हमने बहुत समय तक इन्तजार किया है कि तुम हमारे साथ मिल जाओ। मैं उस घड़ी को भूल नहीं सकता। वह मुझ से बातें करते थे, मेरे मुँह की ओर देखते थे तथा मेरी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते थे। मैंने उनको जवाब दिया कि मैं तो उनके साथ हूँ। मेरा इतना कहना था कि उन्होंने फौरन समाज के सभासद बनने का प्रार्थना–पत्र मँगवाया और मेरे सामने रख दिया। मैं दो–चार मिनट तक सोचता रहा, परंतु उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे हस्ताक्षर लिए बिना तुम्हें जाने न दूँगा। मैंने फौरन हस्ताक्षर कर दिए। उस समय उनके चेहरे पर प्रसन्नता की जो झलक थी उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। ऐसा मालूम होता था कि उनको हिन्दुस्तान की बादशाहत मिल गई है। उन्होंने एकदम पं. गुरुदत्त को बुलाया और सारा हाल सुनाकर मुझे उनके हवाले कर दिया। वह भी बहुत खुश हुए। लाला मदनसिंह के व्याख्यान की समाप्ति पर लाला साँईंदास ने मुझे और पं. गुरुदत्त को मंच पर खड़ा किया। हम दोनों से व्याख्यान दिलवाए। लोग बहुत खुश हुए और खूब तालियाँ बजाईं। इन तालियों ने मेरे दिल पर जादू का सा असर किया। मैं प्रसन्नता और सफलता की मस्ती में झूमता हुआ अपने घर को लौटा।''

यह है लालाजी के आर्यसमाज में प्रवेश की कथा। लाला साँईंदास आर्यसमाज के प्रति इतने अधिक समर्पित थे कि वे होनहार नवयुवकों को इन संस्था में प्रविष्ट करने के लिए सदा तत्पर रहते थे। स्वामी श्रद्धानन्द (तत्कालीन लाला मुन्शीराम) को आर्यसमाज में लाने का श्रेय भी उन्हें ही है। 30 अक्टूबर, 1833 को जब अजमेर में ऋषि दयानन्द का देहान्त हो गया तो 9 नबम्बर 1833 को लाहौर आर्यसमाज की ओर से एक शोकसभा का अयोजन किया गया। इस सभा के अन्त में यह निश्चय हुआ कि स्वामीजी की स्मृति में एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाए, जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृत तथा हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ साथ अंग्रेज़ी और पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान में भी छात्रों को दक्षता प्राप्त कराई जाए। 1886 में जब इस शिक्षण संस्था की स्थापना हुई तो आर्यसमाज के अन्य नेताओं के साथ लाला लाजपतराय का भी इसके संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे कालान्तर में डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर के महान स्तम्भ बने।

वकालत के क्षेत्र में

लाला लाजपतराय ने एक मुख्तार (छोटा वकील) के रूप में अपने मूल निवास स्थान जगराँव में ही वकालत आरम्भ कर दी थी; (किन्तु यह कस्बा बहुत छोटा था, जहाँ उनके कार्य के बढ़ने की अधिक सम्भावना नहीं थी, अतः वे रोहतक चले गए।) उन दिनों पंजाब प्रदेश में वर्तमान हरियाणा, हिमाचल तथा आज के पाकिस्तानी पंजाब का भी समावेश था। रोहतक में रहते हुए ही उन्होंने 1885 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1886 में वे हिसार आ गए। एक सफल वकील के रूप में 1892 तक वे यहीं रहे और इसी वर्ष लाहौर आए। तब से लाहौर ही उनकी सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। लालाजी ने यों तो समाजसेवा का कार्य हिसार में रहते हुए ही आरम्भ कर दिया था, जहाँ उन्होंने लाला चन्दूलाल, पं. लखपतराय और लाला चूड़ामणि जैसे आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं के साथ सामाजिक हित की योजनाओं के कार्यान्वयन में योगदान किया, किन्तु लाहौर आने पर वे आर्यसमाज के अतिरिक्त राजनैतिक आन्दोलन के साथ भी जुड़ गए। 1888 में वे प्रथम बार कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए जिसकी अध्यक्षता मि. जार्ज यूल ने की थी। 1906 में वे पं. गोपालकृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के एक शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैंड गए। यहाँ से वे अमेरिका चले गए। उन्होंने कई बार विदेश यात्राएँ कीं और वहाँ रहकर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की राजनैतिक परिस्थिति की वास्तविकता से वहाँ के लोगों को परिचित कराया तथा उन्हे स्वाधीनता आन्दोलन की जानकारी दी।

लाला लाजपराय ने अपने सहयोगियों– लोकमान्य तिलक तथा विपिनचन्द्र 'पाल' के साथ मिलकर काँग्रेस में उग्र विचारों का प्रवेश कराया। 1885 में अपनी स्थापना से लेकर लगभग बीस वर्षों तक काँग्रेस ने एक राजभक्त संस्था का चरित्र बनाए रखा था। इसके नेतागण वर्ष में एक बार बड़े दिन की छुट्टियों में देश के किसी नगर में एकत्रित होते और विनम्रतापूर्वक शासन के सूत्रधारों (अँग्रेजों) से सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों की अधिकाधिक संख्या में प्रविष्ट करने की याचना करते। 1905 में जब बनारस में सामपन्न हुए कांग्रेस के अधिवेशन में ब्रिटिश युवराज के भारत–आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो लालाजी ने उसका डटकर विरोध किया। कांग्रेस के मंच से यह अपनी किस्म का पहला तेजस्वी भाषण हुआ जिसमें देश की अस्मिता प्रकट हुई थी।

1907 में जब पंजाब के किसानों में अपने अधिकारों को लेकर चेतना हुई तो सरकार का क्रोध लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह (शहीद भगत सिंह के चाचा) पर उमड़ पडा और इन दोनों देशभक्त नेताओं को देश से निर्वासित कर उन्हें पड़ोसी देश वर्मा के माण्डले नगर में नजरबंद कर दिया, किन्तु देशवासियों द्वारा सरकार के इस दमनपूर्ण कार्य का प्रबल विरोध किए जाने पर सरकार को अपना वह आदेश वापस लेना पड़ा। लालाजी पुनः स्वदेश आए और देशवासियों ने उनका भावभीनी स्वागत किया। लालाजी के राजनैतिक जीवन की कहानी अत्यन्त रोमांचक तो है ही, भारतवासियों को स्वदेश–हित के लिए बलिदान तथा महान् त्याग करने की प्रेरणा भी देती है।

जन–सेवा के कार्य

लालाजी केवल राजनैतिक नेता और कार्यकर्ता ही नहीं थे, उन्होंने जन–सेवा का भी सच्चा पाठ पढ़ा था। जब 1896 तथा 1899 (इसे राजस्थान में छप्पन का अकाल कहते हैं, क्योंकि यह विक्रम संवत् का 1956 का वर्ष था) में उत्तर भारत में भयंकर दुष्काल पड़ा तो लालाजी ने अपने साथी लाला हंसराज के सहयोग से अकालपीड़ित लोगों को सहायता पहुँचाई। जिन अनाथ बच्चों को ईसाई पादरी अपनाने के लिए तैयार थे और अन्ततः जो उनका धर्म–परिवर्तन कराने का इरादा रखते थे, उन्हें इन मिशनरियों के चंगुल से बचाकर जिफरोजपुर तथा आगरा के आर्य अनाथालयों में भेजा। 1905 में कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) में भयंकर भूकम्प आया। उस समय भी लालाजी सेवा–कार्य में जुट गए और डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर के छात्रों के साथ भूकम्प–पीड़ितों को राहत प्रदान की। 1907–1908 में उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में भी भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा और लालाजी को पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आना पड़ा।

पुनः राजनैतिक आन्दोलन में

1907 के सूरत के प्रसिद्ध काँग्रेस अधिवेशन में लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों के द्वारा राजनीति में गरम दल की विचारधारा का सूत्रपात कर दिया था और जनता को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गए थे कि केवल प्रस्ताव पास करने और गिड़गिड़ाने से स्वतन्त्रता मिलने वाली नहीं है। हम यह देख चुके हैं कि जनभावना को देखते हुए अँग्रेज़ों को उनके देश–निर्वाचन को रद्द करना पड़ा था। वे स्वदेश आए और पुनः स्वाधीनता के संघर्ष में जुट गए। प्रथम विश्वयुद्ध (1914–18) के दौरान वे एक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में पुनः इंग्लैण्ड गए और देश की आज़ादी

के लिए प्रबल जनमत जागृत किया। वहाँ से वे जापान होते हुए अमेरिका चले गए और स्वाधीनता–प्रेमी अमेरिकावासियों के समक्ष भारत की स्वाधीनता का पक्ष प्रबलता से प्रस्तुत किया। यहाँ उन्होंने इण्डियन होम रूल लीग की स्थापना की थी कुछ ग्रन्थ भी लिखे। 20 फरवरी, 1920 को जब वे स्वदेश लौटे तो अमृतसर में जलियाँवाला बाग काण्ड हो चुका था और सारा राष्ट्र असन्तोष तथा क्षोभ की ज्वाला में जल रहा था। इसी बीच महात्मा गाँधी ने असहयोग आरम्भ किया तो लालाजी पूर्ण तत्परता के साथ इस संघर्ष में जुट गए। 1920 में ही वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बने। उन दिनों सरकारी शिक्षण संस्थाओं के बहिष्कार, विदेशी वस्त्रों के त्याग, अदालतों का बहिष्कार, शराब के विरुद्ध आन्दोलन, चरखा और खादी का प्रचार जैसे कार्यक्रमों को कांग्रेस ने अपने हाथ में ले रखा था, जिसके कारण जनता में एक नई चेतना का प्रादुर्भाव हो चला था। इसी समय लालाजी को कारावास का दण्ड मिला, किन्तु खराब स्वास्थ्य के कारण वे जल्दी ही रिहा कर दिए गए।

1924 में लालाजी काँग्रेस के अन्तर्गत ही बनी स्वराज्य पार्टी में शामिल हो गए और केन्द्रीय धारा सभा (सेन्ट्रल असेम्बली) के सदस्य चुन लिए गए। जब उनका पं. मोतीलाल नेहरू से कतिपय राजनैतिक प्रश्नों पर मतभेद हो गया तो उन्होंने नेशनलिस्ट पार्टी का गठन किया और पुनः असेम्बली में पहुँच गए। अन्य विचारशील नेताओं की भाँति लालाजी भी कांग्रेस में दिन–प्रतिदिन बढ़ने वाली मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति से अप्रसन्नता अनुभव करते थे, इसलिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं. मदनमोहन मालवीय के सहयोग से उन्होंने हिन्दू महासभा के कार्य को आगे बढ़ाया। 1925 में उन्हें हिन्दू महासभा के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष भी बनाया गया। ध्यातव्य है कि उन दिनों हिन्दू महासभा का कोई स्पष्ट राजनैतिक कार्यक्रम नहीं था और वह मुख्य रूप से हिन्दू संगठन, अछूतोद्धार, शुद्धि जैसे सामाजिक कार्यक्रमों में ही दिलचस्पी लेती थी। इसी कारण काँग्रेस से उसका थोड़ा भी विरोध नहीं था। यद्यपि संकीर्ण दृष्टि के अनेक राजनैतिक कर्मी लालाजी के हिन्दू महासभा में रुचि लेने से नाराज़ भी हुए किन्तु उन्होंने इसकी कभी परवाह नहीं की और वे अपने कर्त्तव्यपालन में ही लगे रहे।

जीवन–संध्या

1928 में जब अँग्रेज़ों द्वारा नियुक्त साइमन कमीशन भारत आया तो देश के नेताओं ने उसका बहिष्कार करने का निर्णय लिया। 30 अक्तूबर, 1928 को कमीशन लाहौर पहुँचा तो जनता के प्रबल प्रतिरोध को देखते हुए सरकार ने धारा 144 लगा दी। लालाजी के नेतृत्त्व में नगर के हज़ारों लोग कमीशन के सदस्यों को काले झण्डे दिखाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुँचे और 'साइमन वापस जाओ' के नारों से आकाश गुँजा दिया। इस पर पुलिस को लाठीचार्ज का आदेश मिला। उसी समय सार्जेंट लाण्डर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया जिससे उन्हें सख्त चोट पहुँची। उसी सायं लाहौर की एक विशाल जनसभा में एकत्रित जनता को सम्बोधित करते हुए नरकेसरी लालाजी ने गर्जना करते हुए कहा–मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की प्रत्येक चोट अंग्रेज़ी साम्राज्य के कफन की कील का काम करेगी। इस दारुण प्रहार से आहत लालाजी ने अठारह दिन तक विषम ज्वर की पीड़ा भोगकर 17 नवम्बर, 1928 को परलोक के लिए प्रस्थान किया।

बहुआयामी व्यक्तित्व

लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, सेवाभावी समाजसेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षाशास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। आर्य समाज से ही उन्होंने देश–सेवा का पाठ पढ़ा था और स्वामी दयानन्द से उन्होंने समर्पण तथा सेवा का आदर्श ग्रहण किया था। उनके शब्दों में–आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश–सेवा का पाठ आर्यसमाज से ही पढ़ा है। लालाजी के बलिदान के पश्चात् देशबंधु चित्तरंजनदास की पत्नी श्रीमती वसंती देवी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा था कि क्या देश में कोई ऐसा क्रांतिकारी युवक नहीं है जो भारतकेसरी लालाजी की मौत का बदला ले सके? जब यह बात सरदार भगतसिंह तक पहुँची तो उसने लालाजी पर लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डर्स को मारकर उस अमर देशभक्त की मौत का बदला ले लिया। लाला लाजपतराय देश के स्वाधीनता संग्राम के महान् सेनानी थे। देशवासी उनके त्याग और बलिदान को सदा स्मरण रखेंगे।

लाला लाजतपराय–लेखक और साहित्यकार के रूप में

लालाजी का अध्ययन विशाल था। धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर उनका स्पष्ट चिन्तन था। उनका लेखन विशद, विविध विषयों से सम्पृक्त था, बहुआयामी था, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

जीवनी–लेखन–स्वदेशी और अन्य देशीय महापुरुषों के जीवन–चरित्र–लेखन का उनका कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इटली के विख्यात देश भक्त मैजिनी और गैरीबाल्डी का जीवनी–लेखन तो विदेशी शासकों की दृष्टि में इतना आपत्तिजनक समझा गया कि इन दोनों पुस्तकों की जब्ती के आदेश प्रसारित किए गए। उनके द्वारा निम्न जीवन–चरित्र लिखे गए–

1. लाइफ एण्ड वर्क ऑफ पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए.–इस ग्रन्थ का प्रकाशन 1891 में पं. गुरुदत्त के निधन के एक वर्ष पश्चात् हुआ। यह लालाजी की प्रथम कृति है जिसे उन्होंने अपने मित्र तथा सहपाठी पं. गुरुदत्त के संस्मरणों के आधार पर लिखा था। विरजानन्द प्रेस, लाहौर से प्रकाशित यह ग्रन्थ प्रायः दुर्लभ हो चुका है। इसका उर्दू संस्करण 1992 में छपा था।

2. महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम–स्वामी दयानन्द का यह उर्दू जीवन–चरित्र लालाजी ने 1898 में लिखा। इसका हिन्दी अनुवाद गोपालदास देवगण शर्मा ने किया जो 1898 में ही 'दुनिया के महापुरुषों की जीवन–ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत छपा। 2024 वि. में सार्वदेशिक पत्र ने इसे अपने विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया।

3. योगिराज महात्मा श्रीकृष्ण का जीवन–चरित्र–उर्दू में इसका प्रकाशन 1900 में लाहौर से हुआ। इसका हिन्दी अनुवाद मास्टर हरिद्वारी सिंह बेदिल (गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में अध्यापक) ने किया, जिसे पं. शंकरदत्त शर्मा ने वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद से प्रकाशित किया।

4. शिवाजी महाराज का जीवन–चरित–1896 में उर्दू में प्रकाशित।

5. महात्मा ग्वीसेप मैजिनी का जीवन–चरित–यह भी मूलतः उर्दू में लिखा गया और 1896 में प्रकाशित हुआ। ब्रिटिश शासन ने इसे जब्त कर लिया। इसका हिन्दी अनुवाद श्री केशवप्रसाद सिंह ने किया जिसके कई संस्करण छपे। नेशनल बुक ट्रस्ट ने इसे 1967 में पुनः प्रकाशित किया।

6. गैरीबाल्डी–उर्दू में यह जीवन–चरित्र लिखा गया था। इसे भी अंग्रेज़ों ने प्रतिबन्धित कर दिया था। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् 'नेशनल बुक ट्रस्ट' ने इसे 1967 में पुनः प्रकाशित किया।

7. सम्राट् अशोक–मूल ग्रन्थ उर्दू में था। इसका हिन्दी अनुवाद चौधरी एण्ड संस, बनारस ने 1933 में प्रकाशित किया।

अन्य ग्रन्थ

1. दि आर्यसमाज–आर्यसमाज के सिद्धान्तों, कार्यों तथा उसके संस्थापक स्वामी दयानन्द के जीवन एवं कृतित्व का विश्लेषण करने वाला यह अँग्रेज़ी ग्रन्थ 1914 में लिखा गया था। उस समय लालाजी लंदन में थे। सुप्रसिद्ध लांगमैंस ग्रीन एण्ड कम्पनी ने इसे 1915 में प्रथम बार लंदन से ही प्रकाशित किया। इसका एक भारतीय संस्करण प्रिंसिपल श्रीराम शर्मा ने संपादित किया, जिसमें उपयुक्त परिवर्धन भी किया गया था। ओरियेण्ट लॉगमेस, नई दिल्ली ने इसे 1967 में प्रकाशित किया। इन पंक्तियों के लेखक ने इसका हिन्दी अनुवाद किया जिसके दो संस्करण क्रमशः 1982 तथा 1994 में अजमेर तथा दिल्ली से प्रकाशित हुए। दिल्ली के ही विभिन्न प्रकाशकों ने हाल ही में इसके मूल अँग्रेज़ी संस्करण प्रकाशित किए हैं। तरक्किए उर्दू बोर्ड, दिल्ली ने इसका उर्दू अनुवाद किशोर सुलतान से करवाकर प्रकाशित किया है।

2. दि मैसेज ऑफ भगवद्गीता– इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद से 1908 में प्रकाशित।

3. अनहैप्पी इण्डिया–मिस केथराइन मेंयो नामक एक चालाक अमरीकी महिला पत्रकार ने भारत को बदनाम करने तथा उसे स्वराज्य के लिए अयोग्य सिद्ध करने की दृष्टि से ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों की प्रेरणा पाकर 'मदर इण्डिया' नामक एक पुस्तक लिखी जो भारतीय चरित्र को अत्यन्त विकृत, दूषित तथा घृणोत्पादक शैली में प्रस्तुत करती थी। महात्मा गाँधी ने पढ़कर इसे 'गंदी नाली के निरीक्षक की रिपोर्ट' कहा था। लालाजी ने इस पूर्वाग्रहयुक्त पुस्तक का सटीक और मुँह तोड़ उत्तर 1928 में 'अनहैप्पी इण्डिया' लिखकर दिया। 'दुखी भारत' शीर्षक से इसका हिन्दी अनुवाद इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद ने ही प्रकाशित किया था।

लालाजी ने आर्थिक, राजनैतिक तथा शिक्षा आदि विषयों पर अनेक उच्च–कोटि के ग्रन्थ अंग्रेज़ी में लिखे थे। इनका यथोपलब्ध विवरण इस प्रकार है–

1. England's Debt to India : B.W. Huebsch, New York से 1917 में प्रकाशित।

2. The Evolution of Japan : आर. चटर्जी, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता से 1919 में प्रकाशित।

3. Ideals of Non-cooperation and other Essays : जी.ए. नटेसन, मद्रास से 1924 में प्रकाशित।

4. India's Will to Freedom : Writings and Speeches on the Present Situation : गणेशन एण्ड कम्पनी, मद्रास से 1920 में प्रकाशित।

5. The Problems of National Education in India : 1920 में प्रकाशित। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा 1966 में पुनः प्रकाशित।

6. The Political Future of India: B.W. Huebsch, New York से 1919 में प्रकाशित।

7. Story of My Deportation: पंजाबी प्रेस, लाहौर से 1908 में प्रकाशित।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

महर्षि जी ने धर्म के सच्चे स्वरूप को दर्शाया

● खुशहाल चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द के आने से पहले धर्म को एक मामूली सी चीज़ समझते थे। मिट्टी के एक खिलौने के समान समझते थे, जो छोटी सी भूल से ही टूट जाता था। जैसे यदि कोई अपने व्यापार के लिए विदेश चला गया तो धर्म के ठेकेदार उसे धर्म से निकाल देते थे। कोई दूसरे के हाथ से रोटी खा ली तो वह भी धर्मच्युत हो जाता था। लोग माथे पर टीका खड़ा करें या पड़ा करें इसी को धर्म समझते थे। सिर पर चोटी गले में जनेऊ डालने मात्र को ही धर्म समझ लेते थे। राम नाम की चद्दर ओढ़ लेने मात्र से धर्म समझ लेते थे। मन्दिर में जाकर किसी देवी–देवता के दर्शन मात्र कर लेने को ही धर्म समझते थे। बाकी दिन वह कुछ भी करे उसको छूट मिल जाती थी। हिन्दू जाति अनेक मत–मतान्तरों में बँटी हुई थी। कोई राम का, कोई कृष्ण का, कोई हनुमान का, कोई महादेव का, कोई गणेश का तो कोई दुर्गा, काली तथा लक्ष्मी का उपासक था तो कोई अन्य देवी–देवताओं का उपासक था। वे अपनी देवी या देवता की मूर्ति सामने रखकर उसको अगरबत्ती दिखाकर आरती उतार लेने से ही धर्म का पालन हो गया समझते थे। स्त्रियाँ उपवास रख लेना या किसी देवी–देवता की कथा सुन लेने मात्र को ही धर्म पालन के लिए पर्याप्त प्रयास कर लेना समझती थीं। सही धर्म का बहुत कम लोगों को ज्ञान था। कुछ लोग ही धर्म के बारे में जानते थे। वे अपने तक सीमित रखते थे। किसी को बतलाने की आवश्कता नहीं समझते थे। इस प्रकार धर्म कुछ लोगों की बपौती बन गई थी।

अब प्रश्न उठता है कि धर्म क्या है? धर्म उन गुणों का नाम है जिनको धारण करने से यानी जीवन में उतार लेने से अपना जीवन तो उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होवे साथ ही अन्य लोगों को भी प्रेरणा देकर उनका जीवन भी सुखी व शान्तिमय बनावे और मरने के बाद मोक्ष को प्राप्त करें, इस जीवन पद्धति को धर्म कहते हैं। सही मार्ग पर चलना ही धर्म होता है। धर्मग्रन्थ वह होता है जिसमें यह लिखा हो कि क्या काम करने से तुम सुखी बनोगे और क्या काम करने से दुःखी बनोगे? क्या काम करना चाहिए और क्या काम नहीं करना चाहिए? ऐसा धर्मग्रन्थ केवल वेद ही है जिनको महर्षि देव दयानन्द ने अपने सच्चे गुरु स्वामी विरजानन्द की गोद में करीब तीन वर्ष तक बैठकर वेद सम्बन्धी सभी आर्ष ग्रंथों को पढ़ा और जान लिया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं और वेद की सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेदों के हास्य से ही विश्व की यह दयनीय स्थिति हुई है और इसी के प्रचार व प्रसार से ही विश्व पुनः उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर हो सकता है। यह जानकर साथ ही अपने गुरु को दिये वचनों को पूरा करने के लिए महर्षि ने अपना पूरा जीवन वेद प्रचार परोपकार, मानव उत्थान व प्रचलित कुप्रथाएँ, अन्धविश्वास व पाखंड को मिटाने के लिए लगा दिया। महर्षि ने अपने जीवन में क्या–क्या काम किये उनका संक्षिप्त परिचय।

1. वेद ईश्वरीय ज्ञान है:– महर्षि दयानन्द के आने से पहले वेद ऋषि–मुनियों के बनाए हुए माने जाते थे। परन्तु महर्षि ने गुरु विरजानन्द की गोद में करीब तीन साल बैठकर व्याकरणाचार्य बनकर वेदों के मन्त्रों का सही अनुवाद करना सीख लिया और वेदों के मन्त्रों के आधार पर यह जान लिया कि वेद ऋषि–मुनियों ने नहीं बनाये हैं बल्कि ईश्वर की वाणी है। कई वेद मन्त्रों में ऋषियों का नाम लिखा हुआ है, जिससे यह भ्रम बनता है कि वेद ऋषियों के बनाए हुए हैं परन्तु सही बात है कि जिस मन्त्र में किसी ऋषि का नाम है वह मन्त्र का कर्त्ता नहीं लेकिन दृष्टा है इसलिए उस ऋषि का नाम लिखा है। यह भ्रम महर्षि ने दूर लिया और वेदों को ईश्वरीय ज्ञान बताया। वेद सम्बन्धी महर्षि की मान्यता है कि ईश्वर ने प्रकृति के परमाणुओं से पूरी सृष्टि की रचना करके यानी पशु–पक्षी, जीव–जन्तु, पेड़–पौधे व नदी–पहाड़ आदि सब बनाकर अन्त में मनुष्यों की उत्पत्ति हिमालय के पठार पर युवा स्त्री–पुरुषों के रूप में की ताकि सृष्टि आगे भी चलती रहे। मनुष्य उत्पत्ति के साथ ही ईश्वर ने चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगीरा थे और जो सर्वोतम पुरुष थे उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद क्रमशः उच्चारित करवाये। ईश्वर ने वेदों में शिक्षा के रूप में यह बतलाया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए, उनको मनुष्य अपने जीवन में धारण कर लेंवे तो वह अपना जीवन भी सुखी व आनन्दमय बना सकता है। साथ ही दूसरों का भी बना सकता है और मृत्यु के बाद मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है। यदि मनुष्य उत्पत्ति के बाद ईश्वर वेद–ज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत् ही यह जाता। इसीलिए मानव को सही रूप में मानव बनाने के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया और इसलिए महर्षि ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान बताया।

2. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है:– महर्षि दयानन्द का मानना है कि वेदों में सब सत्य विद्याएँ हैं। पहले के भेद–भाष्यकार वेदों को केवल कर्मकाण्ड के ही ग्रन्थ मानते थे और वेदों को अनादि न मानकर उनमें इतिहास और हिंसा का वर्णन है, ऐसा मानते थे, परन्तु महर्षि ने बताया कि जब वेद–ज्ञान सम्पूर्ण मानव–मात्र के लिए उनके पूरे जीवन को सुचारू रूप में चलने के लिए ईश्वर ने बनाए हैं तो मनुष्य तो सब विद्याओं को जानने के बाद ही अपने जीवन को उत्तम व श्रेष्ठ बना सकता है और मोक्ष प्राप्ति के लिए अग्रसर हो सकता है। इसलिए ईश्वर ने वेदों में सब सत्य विद्याओं का वर्णन किया है तभी मनुष्य उनको पढ़कर और उनके अनुसार चलकर अपने व दूसरों के जीवन को उन्नत कर सकता है और मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

3. वेदों में मानव के लिए जितना ज्ञान आवश्यक है उतना पूर्ण ज्ञान है:– कई विद्वान् कह देते हैं कि वेदों में ईश्वर का सम्पूर्ण ज्ञान है। उनका यह कहना गलत है कारण ईश्वर ने वेद मनुष्यों के लिए ही बनाये हैं, कारण मनुष्य ही भोग व कर्म योनि है, वही अपने किये कर्मों के अनुसार मोक्ष को प्राप्त करता है इसलिए वेद केवल मनुष्यों के लिए ही है। पशु–पक्षी तथा अन्य जीव तो केवल भोग योनि है, वह तो अपने पूरे जीवन में भोग करके दूसरी किसी भी योनि में जाता है, वह अपनी योनि से सीधा मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता इसलिए उसको वेद–ज्ञान की कोई आवश्कता नहीं। वेद ज्ञान केवल मानव–मात्र के लिए है। मानव जिन–जिन कर्मों को करने से मोक्ष प्राप्त कर सकता है, वही कर्म करने का उल्लेख वेदों में है। इससे अधिक ज्ञान वेदों में देने के लिए ईश्वर को आवश्कता भी नहीं। ईश्वर के पास तो अनन्त ज्ञान है जिससे वह पूरी सृष्टि चलाता है। परन्तु वेदों में उतना ही ज्ञान दिया है जितना मनुष्य को आवश्यक है। जैसे कोई शिक्षक एम.ए. या बी.ए. पास है, उसके पास तो एम.ए., बी.ए. का ज्ञान है। यदि वह शिक्षक दसवीं क्लास को पढ़ाता है तो वह विद्यार्थियों को दसवीं क्लास की पुस्तकों का ज्ञान ही करवाएगा। इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्य की आवश्यकता का ज्ञान ही वेदों में दिया है। इसलिए वेद–ज्ञान मनुष्यों के लिए पूर्ण है न कि ईश्वर के लिए।

4. वेद ज्ञान मनुष्यों के लिए संविधान है:– जिस प्रकार किसी राष्ट्र का कोई एक संविधान होता है, उसी के अनुसार चलने से राष्ट्र उन्नत व समृद्धशाली बनता है, इसी प्रकार ईश्वर ने वेद–ज्ञान मनुष्यों को संविधान के रूप में दिया, जिनको पढ़कर और उनको जीवन में उतार कर मनुष्य उन्नति करता हुआ मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसी को पाने के लिए जीव को ईश्वर धरती पर भेजता है।

5. वेदानुसार चलने से ही विश्व का कल्याण है:– जब तक विश्व में वेदों का पठन–पाठन था, तब तक विश्व में परस्पर प्रेम था और सब लोग आनन्द व सुख से जीवनयापन कर रहे थे। महाभारत से करीब एक हज़ार वर्ष पहले वेदों का पठन–पाठन प्रायः लुप्त हो गया तभी से विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया, कारण महाभारत के युद्ध में अधिकतर बलवान, बुद्धिमान, विद्वान, आचार्य व योद्धा मारे गये जिससे स्वार्थी और कम पढ़े–लिखे ब्राह्मणों व पण्डितों का अधिपत्य हो गया। उन्होंने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए अनेक मत–मतान्तर चला दिये जिससे विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड इतना बढ़ गया जिससे विश्व दिशाहीन हो गया। ईश्वर की असीम कृपा से सन् 1825 में देव दयानन्द का टंकारा (गुजरात) में प्रादुर्भाव हुआ। उसको 14 वर्ष की आयु में शिव–रात्रि के दिन एक घटना से सद्ज्ञान हुआ और वह केवल 22 वर्ष की आयु में ही घर छोड़कर सच्चे शिव की खोज में चल पड़ा और करीब तीन साल तक अपने सद्गुरु स्वामी विरजानन्द के पास रहकर वेद तथा आर्ष ग्रन्थों का पूरा अध्ययन करके देश के चारों कोणों में घूम–घूम कर अनेक दुःख, कष्ट व अभावों को सहकर जीवन भर पूरी लगन के साथ वेदों का प्रचार किया जिससे वेदों की कुछ अंश में पुनः स्थापना हुई जिससे देश की उन्नति व समृद्धि पुनः आरम्भ हुई।

6. वेदों में अन्धविश्वास नहीं: – वेदों में जादू टोना, गण्डा–डोरी, सगुन–अपसगुन, फलित ज्योतिष आदि नहीं है। परन्तु इनके मानने के कारण ही देश में अन्धविश्वास व पाखण्ड अधिक बढ़े। दूसरा इनके बढ़ने का कारण मूर्तिपूजा और अवतारवाद है। महर्षि दयानन्द ने इन सबका डटकर विरोध किया। अवतारवाद के बारे में लोगों की मान्यता है कि जब धरती पर अन्याय बढ़ जाता है तब अन्याय को नष्ट करने के लिए ईश्वर किसी न किसी रूप में अवतार लेते हैं। जैसे रावण जैसे अन्यायी को मारने के लिए ईश्वर ने राम का अवतार लिया और कंस जैसे अन्यायी को मारने के लिए कृष्ण के रूप में ईश्वर ने अवतार लिया। महर्षि ने कहा कि ईश्वर सर्वव्यापी, निराकार, अज़र व अमर है। अवतार लेने से ईश्वर को सर्वव्यापी न होकर एक स्थानव्यापी होना पड़ेगा। निराकार न रहकर साकार होना पड़ेगा और मनुष्य शरीर धारण करने के बाद बूढ़ा भी होगा और मृत्यु को भी प्राप्त होगा, इसलिए ईश्वर के ये चारों गुण नष्ट हो जायेंगे। इसलिए ईश्वर अवतार ले ही नहीं सकता, इस प्रकार अवतार मानना मिथ्या है। ऋषि ने कहा कि मूर्ति जड़ है, उसको किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता। जड़ चीज़ कभी किसी का भला या बुरा नहीं कर सकती, इसलिए मूर्ति पूजा करना समय को बरबाद करना है। सामान्यजन कह देता है कि मूर्तिपूजा, मोक्ष प्राप्ति के लिए सीढ़ी है, परन्तु महर्षि कहते हैं कि मूर्तिपूजा मोक्ष प्राप्ति के लिए सीढ़ी नहीं खाई है, जिससे मनुष्य अन्धविश्वास में फँसकर नष्ट हो जाता है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द अपने जीवन भर ईंट–पत्थर खाकर, ज़हर पीकर अनेक दुःखों, कष्टों व अभावों को सहते हुए दिन–रात कठोर परिश्रम करके वेदज्ञान के प्रकाश को केवल भारत देश में ही नहीं बल्कि विश्व में प्रकाशित किया जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड प्रायः समाप्त हो गया इसके लिए मानव मात्र महर्षि दयानन्द का सदैव ऋणी बना रहेगा।

180, महात्मा गाँधी रोड
(दो तल्ला) कोलकाता–700007
मो. 9830135794

सत्यार्थ प्रकाश और वैदिक संस्कृति

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखकर मानव जाति पर अनुपम कृपा की है। संसार की श्रेष्ठता के लिए इससे उत्तम कहीं कोई ग्रन्थ नहीं लिखा गया। यह ऐसा ग्रन्थ है जिसमें किसी भी सम्प्रदाय मत व किसी भौगोलिक क्षेत्र का पक्षपात नहीं किया गया है, जो सत्य है वही वर्णन किया गया है। सत्य को ग्रहण करना असत्य को छोड़ना मुख्य है।

महर्षि की भूमिका के अनुसार जो–जो सब मतों में सत्य–सत्य बातें हैं वे–वे सबमें अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो–जो मतमतान्तरों में मिथ्या बाते हैं उन–उन का खण्डन किया है। महर्षि ने किसी के साथ न भेद–भाव न ही पक्षपात किया है जबकि वह आर्यावर्त (भारत) में ही जन्मे। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास के पश्चात् बारहवें, तेरहवें तथा चौदहवें समुल्लास में सर्वप्रथम आर्यावर्त देश में ही फैले हुए पाखण्डों कुरीतियों पर कुठाराघात किया है। ग्यारहवें समुल्लास में नास्तिक मत जैन बौध चारवाक क्रिश्चियन तथा यवन मत पर समीक्षा की है यदि यह सभी भारतवासी व विश्व के जन निष्पक्ष होकर दुराग्रह छोड़कर अपने अपने मतों में से जो असत्य है उसे छोड़ मात्र सत्य को मानें तो विश्व में कहीं विरोधाभास नहीं रहेगा, सर्वत्र सुख व शान्ति स्थापित हो सकती है।

स्वायं भुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा, जब तक आर्यों का शासन रहा, वेद का प्रचार चलता रहा, वर्णव्यवस्था आश्रम व्यवस्था समुचित प्रकार से चलती रही। प्रत्येक आश्रम व वर्ण वाला व्यक्ति स्त्री–पुरुष अपने कर्त्तव्यों का पालन भी सुचारु रूप से करता था बाद में इस व्यवस्था में क्षीणता आ गयी, जब वेद ज्ञान का प्रवाह व प्रचार न रहा लोग वेद विरुद्ध आचरण करने लगे, ईर्ष्या द्वेष बढ़कर अपने अपने मत चला दिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत साधन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं।

आज की स्थिति भी ऐसी ही भयावह व विस्फोटक होती जा रही है विश्व पर आतंकवाद अलगाव वाद की काली छाया मंडरा रही है। कभी सम्पूर्ण पृथ्वी एक ही थी एक राज्य था। बंटते–बंटते छोटे–छोटे राज्य व देश मात्र रह गए, उनमें भी परस्पर झगड़े हैं, उत्तर व दक्षिण कोरिया, ईरान, इराक, इजराइल, फलीस्तीन, भारत, पाकिस्तान व बड़े–बड़े देशों में अलग खींचातानी चलती रहती है। उसका कारण वेद विरुद्ध मत व सम्प्रदाय है एक बार सभी सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय कर लें तो सुख–शान्ति का मार्ग निकल आएगा। यदि संसार को सुखमय बनाना है तो सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन तो करना ही होगा वेदों की ओर लौटना होगा।

सत्यार्थ प्रकाश ऐसा ग्रन्थ है जिसे जितनी बार पढ़ा जाएगा उतना ही ज्ञान का प्रकाश बढ़ता जाएगा। यहाँ तो सत्यार्थ प्रकाश के विषय में सम्पूर्ण विवरण लिखा नहीं जा सकता बस इतना अवश्य कहना है कि जीवन में सत्यार्थ प्रकाश कम से कम एक बार तो अवश्य ही पढ़े तथा प्रयास करें कि अपने सम्बन्धियों, मित्रों को भी देंवे। घर परिवार आदि कहीं भी कोई कार्यक्रम हो वहाँ इसके विषय में अवश्य चर्चा करे, जितना भी सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान फैलेगा सुख–शान्ति स्थापित होगी। वैदिक धर्म का आचरण होगा माता–पिता सन्तानों के हृदय में आरम्भ से ही सत्यार्थ ज्ञान का प्रकाश करें, परिवार में सुख–शान्ति बनी रहेगी, समाज में प्रकाश करने से समाज में एक रुपता आएगी, अधर्म व पाखण्ड हटकर धर्म का प्रकाश होगा। विश्व में सुख–शान्ति का मार्ग है तो सत्यार्थ प्रकाश में ही है।

चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा
मो. 9557793541

वीर बालक हकीकत राय के बलिदान की कहानी

मुगल सम्राट मुहम्मद शाह रंगीला के शासन काल में धर्मवीर हकीकत राय का जन्म पंजाब के प्रसिद्ध नगर स्यालकोट (अब पाकिस्तान में) में सन् 1719 में हुआ। पाँच वर्ष की आयु में हकीकत राय को विद्वान् पण्डित जी के पास हिन्दी–संस्कृत पढ़ने के लिए भेज दिया गया। उसके पिता भागमल सरकारी कार्यालय में क्लर्क थे। उस समय सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए फ़ारसी भाषा का ज्ञान आवश्यक था। मुल्ला लोग मस्जिदों में ही फ़ारसी पढ़ाया करते थे। दस वर्ष की आयु में हकीकत राय को भी मस्जिद में मुल्ला के पास फ़ारसी पढ़ने के लिए भेजा गया।

मस्जिद में मुसलमान लड़के हिन्दू विद्यार्थियों से छेड़खानी करते रहते थे और उनके देवी देवताओं की निन्दा करके हिन्दू धर्म को नीचा दिखाते थे। हकीकत राय अत्यन्त मेधावी एवं तीक्ष्ण बुद्धि वाला था। वह आम तौर पर मुसलमान लड़कों को बहस में हरा देता था। अतः मुसलमान लड़के हकीकत राय से चिढ़ते थे तथा उसके विरुद्ध ज़हर उगलते रहते थे। एक दिन मुल्ला की अनुपस्थिति में उन्होंने हकीकत राय के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, उसे बहुत पीटा और जब मुल्ला आया उसके पास हकीकत के विरुद्ध आरोप लगाया कि उसने हज़रत मुहम्मद साहब की बेटी फातमा को गाली दी है। यह सुनते ही मुल्ला आग बबूला हो गया और हकीकत को पकड़ कर नगर के शासक के पास ले गया। शासक ने नगर के मुसलमान काजियों को बुलाया और उनसे हकीकत के अपराध के लिए फतवा (इस्लाम के अनुसार फैसला) माँगा। सब काजियों ने एक मत से निर्णय दिया कि हकीकत ने जो अपराध किया है उसका दण्ड मृत्यु है। परन्तु यदि वह मुसलमान बन जाए तो उसे क्षमा किया जा सकता है। यह खबर शहर में आग की भाँति फैल गई।

हकीकत राय के पिता के साथ बहुत से प्रमुख हिन्दू इकट्ठे होकर शहर के शासक के पास गये और कहा कि हकीकत बालक है, नादान है, इसलिए उसे क्षमा कर दिया जाये। परन्तु वहां न्याय कहाँ! अन्त में शहर के शासक ने मामला गम्भीर देखकर इसे लाहौर के बड़े शासक के पास भेज दिया। लाहौर में भी मुल्ला लोग इकट्ठे होकर उसी बात पर अड़े रहे कि हकीकत मुसलमान बन जाए अन्यथा उसका कत्ल कर दिया जाये।

लाहौर के शासक ने हकीकत राय को मुसलमान बनने के लिए लालच भी दिए। उसके माता–पिता ने भी पुत्र की जान बचाने के लिए उसे मुसलमान बनने की सलाह दी। परन्तु पन्द्रह वर्ष के वीर बालक हकीकत राय ने मुसलमान बनना स्वीकार न किया।

सन् 1734 में बसन्त पंचमी के दिन हकीकत राय को लाहौर की कत्लगाह में ले जाया गया। सारे शहर में हाहाकार मच गया। हज़ारों नर–नारियों के जमघट के सामने जल्लाद ने एक बार फिर हकीकत राय को कहा कि वह इस्लाम स्वीकार करके अपनी जान बचा ले, पर हकीकत राय न माना। जल्लाद ने तलवार के एक ही वार से हकीकत राय का सर तन से अलग कर दिया। लाहौर के हिन्दुओं ने शहर से चार मील की दूरी पर शालीमार बाग के पास उसका अंतिम संस्कार कर दिया।

प्रस्तुतिः
कृष्ण चन्द्र गर्ग
0172–4010679
kcg831@yahoo.com

सन्दर्भ ग्रंथ–'धर्मवीर हकीकत राय' द्वारा डॉ. गोकुल चन्द नारंग

☞ *पृष्ठ 07 का शेष*

ग्रन्थकार लाला लाजपतराय ...

8. Young India–An Inerpretation and History of the National Movement : B.W. Hubsch, New York से 1916 में प्रकाशित। भारत लोक–सेवक मण्डल (Servants of the People's Society) लाहौर द्वारा 1927 में लाहौर से प्रकाशित भारतीय संस्करण।

9. Report of People's Famine Relief Movement–1908 : लाहौर से 1909 में प्रकाशित।

10. The Story of My Life : The People, लाहौर का लाजपतराय विशेषांक (अप्रैल 13, 18 सन् 1929)

यह लालाजी की आत्मकथा है जिसका हिन्दी अनुवाद पं. भीमसेन विद्यालंकार ने किया, जो 1932 में नवयुग ग्रन्थमाला, लाहौर से प्रकाशित हुआ।

लालाजी की जन्म शताब्दी (1965) के अवसर पर विजयचन्द्र जोशी ने 'लाला लाजपतराय–आटोबायोग्राफिकल राइटिंग्स' शीर्षक से उनकी आत्मकथा का सम्पादन किया तथा दो खण्डों में लालाजी के लेखों तथा भाषणों का संग्रह भी प्रकाशित किया।

लालाजी सफल पत्रकार भी थे। उन्होंने उर्दू में 'पंजाबी' तथा 'वन्देमातरम्' नामक पत्र निकाले। 1918–20 में उन्होंने न्यूयार्क से 'यंग इण्डिया' नामक एक अंग्रेज़ी मासिक भी प्रकाशित किया था।

देश की आर्थिक और वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना 1894 में की। बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन इसके मुख्य सचिव रहे थे। लालाजी द्वारा स्थापित भारत लोक–सेवक मण्डल (Servants of the People's Society) ने देश के नवजागरण तथा सेवा का अभूतपूर्व कार्य किया है। प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री तथा पं. अलगूराय शास्त्री जैसे देशभक्तों ने लालाजी से प्रेरणा लेकर ही राष्ट्र–सेवा का पाठ पढ़ा था।

आर्यसमाज के कालजयी ग्रन्थ से साभार

पत्र/कविता

सर्दियों में खजूर होता है शक्ति-स्फूर्तिदायक

खजूर मधुर, शीतल, पौष्टिक व सेवन करने के बाद तुरंत शक्ति–स्फूर्ति देनेवाला है। यह रक्त, मांस व वीर्य की वृद्धि करता है। हृदय व मस्तिष्क को शक्ति देता है। वात, पित्त व कफ इन तीनों दोषों का शामक है। यह मल व मूत्र को साफ लाता है। खजूर में कार्बोहाइड्रेटस, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नेशियम, लौह आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। 'अमेरिकन कैंसर सोसाइटी' के अनुसार शरीर को एक दिन में 20–34 ग्राम डाएटरी फाइबर (खाद्य पदार्थों में स्थित रेशाद्ध की जरुरत होती है, जो खजूर खाने से पूरी हो जाती है।

खजूर रात भर पानी में भिगोकर सुबह लेना लाभदायक है। खजूर रक्त को बढ़ाता है और यकृत (लीवर) के रोगों में लाभकारी है। रक्ताल्पता में इसका नियमित सेवन लाभकारी है। नींबू के रस में खजूर की चटनी बनाकर खाने से भोजन की अरुचि मिटती है। खजूर का सेवन बालों को लंबा, घना और मुलायम बनाता है।

आजकल खजूर को वृक्ष से अलग करने के बाद रासायनिक पदार्थों के द्वारा सुखाया जाता है। ये रसायन शरीर के लिए हानिकारक होते है। अतः उपयोग करने से पहले खजूर को अच्छी तरह से धों लें।

होली के बाद खजूर खाना हितकारी नहीं है।

डाइविटीज वाले खजूर की जगह पर किशमिश का उपयोग करना।

वैद्य नवनीत भारद्वाज
निघन्टु आयुर्वेदिक उपचार केन्द्र
सेक्टर–25, मलिक पेट्रोल पम्प
जी.टी. रोड पानीपत, हरियाणा

****

तुम्हें जगाने आ गया महापर्व गणतंत्र

तुम्हें जगाने आ गया, महापर्व गणतंत्र।
सुख पाओगे सीख लो देशभक्ति का मंत्र।।
देशभक्ति का मंत्र साथियों! है सुखदाता।
देशभक्त बलवान, मान जग में है पाता।।
देशभक्ति के बिना, व्यर्थ है मानव जीवन।।
जैसे जल बिन ताल, फूल बिन जैसे उपवन।।
भला इसी में देशभक्त बन जाओ प्यारो!
बिगड़ गया है हाल, देश का, इसे सुधारो।।

प्यारे युवको–युवतियो, करो उन्हें भी याद।
जो इस प्यारे देश को करा गए आजाद।।
करा गए आजाद, धन्य थे, वे नर बंका।
आजादी का बजा गए जो निर्भय डंका।।
देश धर्म की भेंट चढ़ाई भरी जवानी।
नहीं मौत से डरे, निराले थे बलिदानी।।
भारत वीर सपूत वही लाए आज़ादी।
धूर्त स्वार्थी लोग, रहे हैं कर बर्बादी।।

जाति–पाति का देश में है अब भारी जोर
गुण की कीमत है नहीं, पक्षपात है घोर।।
पक्षपात है घोर, स्वार्थी हैं अब नेता।
कुर्सी से है प्यार, दिखाई देश न देता।
ऊंच–नीच का रोग, भयंकर बढ़ा रहे हैं।
शैतानों को नीच, शीर्ष पर बैठा रहे हैं।
धर्म–कर्म को भूल गए, नेता अज्ञानी।
याद इन्हें न रहीं इन्हें शहीदों की कुर्बानी।।

महापर्व गणतंत्र पर, जय प्रण करो सब आज।
तुम्हें बचानी है सुनो, भारत मां की लाज।।
भारत मां की लाज बचाओ वीरो जागो।
करो परस्पर मेल, फूट पापिन को त्यागो।
उग्रवाद–आतंकवाद का रोग मिटाओ।
जीवन करलो सफल, समय मत व्यर्थ गंवाओ।
'नन्दलाल' निज नाम, अमर जग में कर जाओ।।

'नन्दलाल निर्भय'
आर्य सदन, बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष क्रमांक – 9813845774

तुलसी-औषधि भी है

चरक संहिता में "तुलसी" पौधे को सर्वश्रेष्ठ औषधियों में शामिल किया गया है। शीत ऋतु में तुलसी का प्रयोग संजीवनी औषधि है।

यह प्रसन्नता है कि अधिकांश हिंदू धर्म के अनुयायी "तुलसी" का पौधा अपने घर में अवश्य रोपते हैं। और उसको धार्मिक मान्यता भी प्रदान करते हैं। परंतु खेद है कि इस अत्यन्त महत्वपूर्ण औषधि का प्रयोग यदा–कदा ही किया जाता है।

नई देहली के एक व्यावसायिक भीकाजी कामा प्लेस के अर्न्तगत शरद मोहन का सी.ए. कार्यालय हैं इस कार्यालय में जब आप प्रवेश करेंगे तो "तुलसी जी" का पौधा आपका स्वागत करेगा। यदि आप शरद मोहन जी की चाय पियेंगे तो उस चाय में तुलसी दल का समावेश अवश्य होगा।

काश शरद मोहन सी.ए. जैसे व्यवसायी से अन्य व्यवसायी भी प्रेरणा लेकर अपने कार्यालय में तुलसी का पौधा रोपित करें

कृष्ण मोहन गोयल 113
बाजार कोट अमरोहा

****

मेथी बवासीर कृमिरोग का नाश करती है।

दोहन–कब्ज कारक–बलकारक हृदय को ताकत देती है। वात कफ़नाशक एवं ज्वर नाशक है। कटु तिक्त रस लघुरश रुक्ष उष्मवीर्य और कटुविपाक है। वायु को शान्त करने वाली पौष्टिक संधिवात–कमर दर्द में लाभदायक। सुश्रुत मेथी की भाजी को रुक्ष एवं मल–मूत्र को रोकने वाली मानते हैं।

वैज्ञानिक मत इसमें तेल, राल और अलव्युमिन होता है। इसमें 25% फास्फोरिक एसिड होता है।

डॉ. आर.एन शोरी के अनुसार मेथी चिकनी बलकारक और वायु नाशक है। यह संग्रहणी–अग्नि मन्दता–और वात रोगों का नाश करती है।

उपयोग

1. शीतकाल में मेथी का सेवन करने वालों को वायु रोग नहीं होता।
2. मेथी वात रोग में श्रेष्ठ मानी जाती है।
3. मेथी स्त्रियों के लिए बहुत उपयोगी है। दुर्बलता दूर होकर शक्ति आती है।
4. वातरोगियों और कफ़रोगियों को पथ्य में दी जाती है।
5. संधिवात, कमर का दर्द तथा जोड़ों का दर्द में लाभ देती है।
6. शीतकाल में मेथी पाक या लड्डू खाना हितकारी है।
7. मेथी का आटा–दही में मिलाकर खाने से पेचिश मिटती है।
8. मेथी के कोमल पत्तों का साग कब्ज को दूर करता है।
9. मेथी व्रण का दाह सूजन कम करती है।
10. मेथी का चारमाशा चूर्ण लेने से जीर्ण आमातिस्तार मिटता है।

हरिश्चन्द्र आर्य
अमरोहा (उ.प्र.)

****

क्या आप जानते हो?

1. लम्बे लम्बे नाखून बढ़ाना और उन पर नेल पालिश लगाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
2. स्टोव या गैस की नंगी लौ पर कोई चीज भूनकर या सेककर खाना हानिकारक है। वस्तु में दुर्गन्ध भर जाती है।
3. चाय की पत्ती को बार–बार उबाल कर पीने से दाँत और आँत दोनों खराब हो जाते हैं।
4. धूम्रपान मद्यपान करना अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना है।
6. माँस, मछली, अण्डे, चिकन मनुष्य का भोजन नहीं है। इनके खाने से शरीर में अनेक प्रकार के भयंकर रोग लग जाते हैं। यदि स्वस्थ निरोग रहना चाहाते हो तो शुद्ध शाकाहारी बनो।

देवराज आर्यमित्र
WZ–428 हरि नगर, नई दिल्ली 110064

****

हिन्दी पुत्री पाठशाला तथा मॉडल सी. सै. खन्ना का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

हिन्दी पुत्री पाठशाला सी.सै., खन्ना में हिन्दी पुत्री पाठशाला तथा डी.ए.वी मॉडल सी. सै. स्कूल का वार्षिक वितरण समारोह हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ।

मैनेजर श्रीमती सरोज कुन्दरा, चेयरमैन श्री कुलभूषण राय सोफत, प्रि. श्रीमती रजनी वर्मा, प्रि. अनीता वर्मा मुख्यातिथि सांसद डॉ. अमर सिंह तथा विशेषातिथि श्री विकास मेहता प्रधान नगरपालिका का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ ज्योति प्रज्ज्वलन से हुआ। मैनेजर श्रीमती सरोज कुन्दरा जी ने अपने भाषण में मुख्यातिथि डॉ. श्री अमर सिंह के व्यक्तित्व के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. श्री अमर सिंह जी ने डॉक्टर के रूप में करियर की शुरुआत की, 32 वर्ष IAS ऑफिसर के रूप में चार जिलों के डी.सी. तथा 10 वर्ष मुख्य मंत्री के सचिव के रूप में कार्य किया और आज एक सफल नेता के रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं। विशेषाथिति श्री विकास मेहता का जीवन परिचय देते हुए कहा कि खन्ना शहर के विकास के लिए इनका विशेष योगदान है। मैनेजर साहिबा ने बताया कि सन् 1949 में आरम्भ हुई हिन्दी पुत्री पाठशाला सी.सै. खन्ना ने इस वर्ष अपने 70 वर्षो का सफर शिक्षा, खेलों, सांस्कृतिक गतिविधियों में राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अचम्भित उपलब्धियों सहित पूर्ण सफलता से तय कर लिया है।

मुख्यातिथि ने अपने भाषण में कहा कि एक बच्चे के जीवन में अध्यापक और मां की जीवन में अहम् भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि वे डी.ए.वी. के विद्यार्थी रहे हैं तथा डी.ए.वी का उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। छात्र/छात्राओं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसका दर्शकों ने खूब आनन्द उठाया। मुख्यातिथि तथा विशेषातिथि ने विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं को पुरस्कार वितरित किए। अन्त में संस्था के चैयरमैन एडवोकेट श्री कुलभूषण राय सोफत जी द्वारा आए हुए सभी मेहमानों का धन्यवाद किया गया।

कुरुक्षेत्र के सूर्य ग्रहण मेले में 'वेद-प्रचार'

आर्य प्रादेशिक उपसभा हरियाणा एवं आर्य समाज वेद मंदिर (वेद भवन) रेलवे रोड़ कुरुक्षेत्र की ओर से सूर्य ग्रहण के अवसर पर आर्य समाज वेद भवन के विशाल प्रांगण में विश्व शांति की कामना के लिए गायत्री महायज्ञ एवं चतुर्वेद शतक द्वारा यज्ञ कर के वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया गया। जिसमें प्रातः एवं सांय तक विशेष यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश द्वारा जन समूह को आत्मिक लाभ प्रदान किया गया।

समस्त कार्यक्रम का संचालन वेदोपदेशक पं. जगदीश चन्द्र बसु के ब्रह्मत्व में हुआ, प. ओमवीर जी की व्यवस्था एवं वेदपाठी रहे। श्रीमती निर्मला बसु एवं श्री जयपाल आर्य के भजनोपदेश हुए। विद्वानों एवं आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया गया।

आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी, उधमपुर) में लगेगा योग-ध्यान, साधना शिविर

एक विज्ञप्ति के अनुसार आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू काश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 26 अप्रैल से 3 मई -2020 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन होगा, जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाएगा। इस अवसर पर पूज्य चैतन्यस्वामीजी के ब्रम्हत्व में प्रतिवर्ष की भाँति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। उपनिषद् एवं योग-दर्शन पर मुख्यतः चर्चाएं होंगी तथा शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं0 09419107788 व 07006647800 पर तुरन्त सम्पर्क कर सकते है।

डी.ए.वी. रूपनगर (पंजाब) ने मकर सक्रांति का पर्व मनाया

डी.ए.वी., पब्लिक सी. सै. स्कूल रोपड़ (पंजाब) में मकर सक्रांति के अवसर पर हवन यज्ञ करवाया गया। स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती संगीता रानी तथा अन्य सभी अध्यापकों के द्वारा यज्ञ में आहुतियाँ डाली गई। जनवरी महीनों के जन्में स्कूल के सभी छात्रों के द्वारा भी हवन यज्ञ में आहुतियाँ डलवाई गई तथा सभी बच्चों की अच्छी सेहत तथा जीवन में सफलता की तथा सभी के खुशहाल जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 22/23-01-2020

आर आर बावा डी.ए.वी. बटाला में नववर्ष पर यज्ञ का आयोजन

आर आर बावा डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, बटाला में नव वर्ष एवं नव सेमैस्टर के शुभारम्भ के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री बालकृष्ण मित्तल, सचिव डी.ए.वी प्रबन्धकर्त समिति, नई दिल्ली मुख्यातिथि स्वरुप पधारे। इस आयोजन में श्री विजयन्त मरवाहा सहित स्थानीय समिति के सदस्य तथा डी.ए.वी संस्थाओं के प्राचार्या/प्राचार्य भी उपस्थित हुए।

सर्वप्रथम वैदिक मन्त्रोंच्चारण सहित यज्ञ में आहुति डाल कर सभी ने राष्ट्र एवं समाज कल्याण के लिए प्रार्थना की। गतवर्ष की उपलब्धियों के लिए परमात्मा का धन्यवाद किया एवं नव वर्ष में पुनः सुख शान्ति खुशहाली हो, की प्रार्थना की गई।

कॉलेज प्रिंसीपल महोदया ने कॉलेज में हुई गतवर्ष की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया एवं आये हुए सभी महानुभावों का अभिनन्दन किया।

श्री बालकृष्ण मित्तल ने सभी को आशीर्वचन देते हुए कॉलेज का प्रगति पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की एवं सभी को नववर्ष एवं नवसत्र के शुभारम्भ के लिए शुभकामनाएं भेंट की। यज्ञ का सम्पादन श्री राजकुमार शास्त्री द्वारा किया गया। मंच का संचालन डॉ. (श्रीमती) इन्द्रा विरक ने किया।

इस अवसर पर कॉलेज की त्रैमासिक पत्रिका न्यूजलेटर "नव्यदृष्टि" का विमोचन भी मुख्यातिथि द्वारा किया गया। संगीत विभाग की छात्राओं ने भजन गायन किया। श्री राजेश कवात्रा जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए नववर्ष की सभी को शुभकामनाएं भेंट कीं। शान्तिपाठोपरान्त यज्ञ का समापन किया गया।

इस अवसर पर कॉलेज प्रांगण में हर्ष एवं आनन्द का वातावरण था।

झज्जर में वैदिक यज्ञ - भजन - प्रवचन - अभिनन्दन समारोह

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, मोहल्ला भट्ठी गेट, झज्जर में वैदिक यज्ञ – भजन – प्रवचन – अभिनन्दन समारोह का आयोजन हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा रिटायर्ड फ्लाईग ऑफिसर महावीर सिंह आर्य तथा मुख्य वक्ता रिटायर्ड कॉलेज प्राचार्य डॉ. एच.एस. यादव रहे। मुख्य यजमान श्रीमती मामकौर एवं महाशय रतिराम आर्य रहे। यज्ञ समिति झज्जर के लगभग 40 होनहार विद्यार्थियों को वस्त्रों से सम्मानित किया गया।

श्री महावीर सिंह आर्य ने घर में सुख–शान्ति के लिए पांच महायज्ञों का पालन करने की बात कही। निराकार ईश्वर की उपासना करना ब्रह्मयज्ञ है। पर्यावरण की शुद्धि के लिये हवन करना देवयज्ञ है।

जीवित माता–पिता, बुजुर्गों का सम्मान व सेवा करना पितृयज्ञ है। पशु–पक्षी, विकलांग, अनाथ, विधवा आदि की मदद करना बलिवैश्वदेवयज्ञ है। सदाचारी विद्वान द्वारा दिये गये उपदेश को ग्रहण करना अतिथियज्ञ है। डॉ. एच.एस. यादव ने कहा कि माता–पिता की असली सम्पदा संतान होती है। बच्चों को अच्छे संस्कार देकर ही उनके भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। माता–पिता अपने आचरण से संतानों के अन्दर अच्छे संस्कार आसानी से डाल सकते हैं।

रिटायर्ड प्राध्यापक द्वारकादास ने आर्यो के अन्दर कथनी व करणी में एकरूपता की बात कही तथा लाला प्रकाशवीर आर्य ने आर्य समाज के सत्संगों में बढ़चढ़कर भाग लेने की बात कही। पंडित जयभगवान आर्य, श्री भगवान सिंह, दलीप आर्य तथा मास्टर पनसिंह ने महर्षि दयानन्द संबंधी भजन तो अध्यापिका सुमित्रा ने ईश्वर भक्ति का भजन सुनाया। बालक अनमोल ने विद्यार्थी की सफलता में मन की एकाग्रता को रेखांकित किया। मंच का संचालन श्री मुकेश आर्य ने किया।

आर्यसमाज द्वारा सीएए कानून पर भारत सरकार का सर्वसम्मत समर्थन

'आर्य उपप्रतिनिधि सभा, (जिला स्तरीय) देहरादून' की ओर से एक सभा व गोष्ठी पं. दीन दयाल पार्क निकट घंटाघर पर आयोजित हुई जिसमें आर्यसमाज के अनेक प्रतिनिधि, आर्यसमाजी विद्वान एवं नेता सम्मिलित हुए। इस सभा को आर्य विद्वानों एवं नेताओं ने सम्बोधित किया। जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, देहरादून के प्रधान श्री शत्रुघन कुमार मौर्य ने बताया कि सी.ए.ए. कानून में पाकिस्तान, बंग्लादेश तथा अफगानिस्तान से भारत आये वहां के बहुसंख्यकों के अमानवीय अत्याचारों से पीड़ित अल्पसख्यक समुदाय के लोगों को भारत की नागरिकता देने का प्रावधान है। इस कानून के अनुसार सन् 2014 तक

भारत आये लोगों को नागरिकता दी जायेगी। इस कानून में भारत के किसी नागरिक को देश से बाहर भेजने का प्रावधान नहीं है। इस कानून के विरोध में देश में जो संगठित हिंसा व आगजनी आदि की घटनायें हुई हैं वह सब सुनियोजित थीं जिनके पीछे देश के असामाजिक एवं देश विरोधियों का हाथ था। देश की सरकार के विरोधी लोग ही मुख्यतः सीएए विरोधी आन्दोलन में सम्मिलित रहे हैं।

सीएए तथा एनआरसी के विरोध को विद्वानों ने दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि सीएए विरोधी आन्दोलन का विरोध एवं इसका सीएए का समर्थन सभी राष्ट्रवादी शक्तियों को मत–मतान्तरों एवं राजनीति से ऊपर उठकर करना चाहिये। वक्ताओं ने सीएए के विरोध को देशहित व मानवीयता के विरुद्ध बताया। वक्ताओं ने कहा कि यदि देश विरोधी शक्तियों का पुरज़ोर विरोध न किया जाये तो इससे देश का वातावरण खराब होने के साथ निर्दोष लोगों के जान व माल को खतरा होता है। अतः आर्यसमाज द्वारा एक स्वर से सीएए व एनआरसी कानून का समर्थन एवं इसके विरोधियों का विरोध किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**